मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १५६ • जुलाई-२०२०

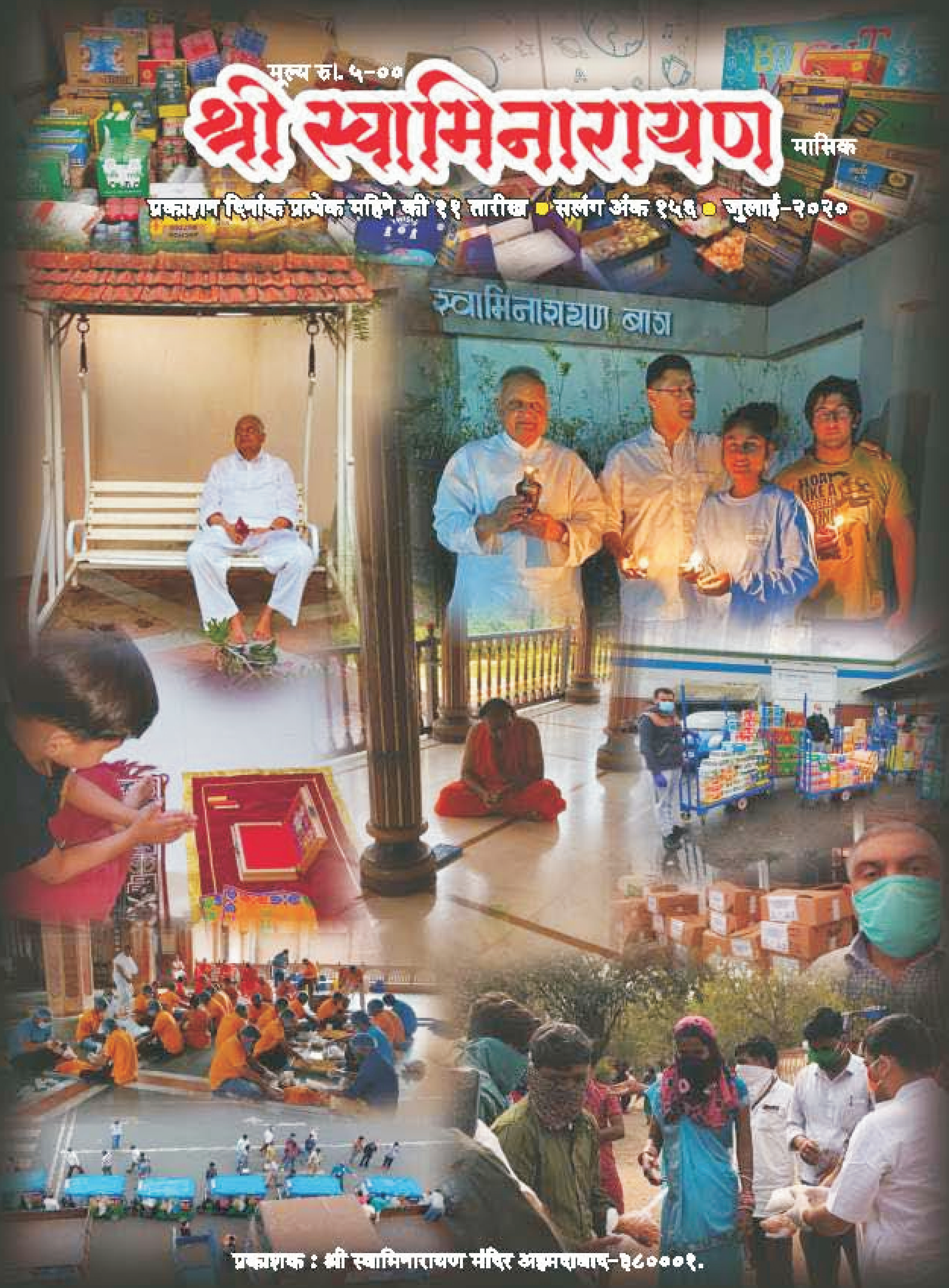

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-६८०००१.

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश गद्दी के देश-विदेश के मंदिरो द्वारा कोरोना काल में अन्नदान सेवा करते हुए संत-हरिभक्त ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १३ ● अंक : १५६
जुलाई-२०२०

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्री स्वामिनारायण भगवान की स्तुति प्रार्थना	०६
०४.	तीर्थ, क्षेत्रऔर धाम	१०
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन	१२
०६.	अति सुंदर आशीर्वाद	१
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१७
०८.	सत्संग बालवाटिका	१९
०९.	भक्ति सुधा	२१
१०.	सत्संग समाचार	२४

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

श्रीजी महाराज ने
वचनामृत में चार प्रकार के प्रलय की
बात कहे है । ऐसा कहा जाता है कि ऐसा करके
परमेश्वर पृथ्वी के सन्तुलन को अच्छा करते है । जब-जब हम
सभी लोग अपने कर्म और आचरण को नियम विरुद्ध करने लगते है ।
तब कर्म के फलस्वरुप अधर्म होता है । इसी अधर्म को नष्ट करने के लिये
परमात्मा अवतार धारण करते है । और अपने सच्चे भक्तो की रक्षा करके,
धर्मयुक्त जीव आत्मा के मोक्ष का मार्ग मिले । ऐसे मार्ग की स्थापना करते है ।
वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में फैली बिमारी एक प्रकार का प्रलय का
लक्षण है । ऐसे संकट के वातावरण में शिक्षापत्री में दिये आदेशानुसार स्वपर
रक्षा कर्तव्या अपनी तथा दूसरे की रक्षा हो ऐसा व्यवहार करना चाहिए । जैसे
अपने हाथ को बार-बार धोना चाहिए । एक दूसरे को स्पर्श नही करना
चाहिए। आपस में दूरी बनाकर सभी प्रकार का व्यवहार करना चाहिए । यह
बात आज से दो सौ वर्ष पूर्व श्रीजी महाराजने बताया था । उत्सवाहेषु नित्यं च
कृष्णमंदिरमागतैः । पुम्भिः स्पृश्या न वनितास्तत्र तामिश्च पुरुषाः ॥ बड़े-बड़े
उत्सव हो या भगवान के दर्शन हेतु प्रतिदिन मंदिर जाना हो । तब एक दूसरे
को स्पर्श न करें । इसी बात का पालन हम सबको करना है । क्योकि तीन-
तीन महीने बीत गये है । मंदिर में भगवान का दर्शन न करना लोगो की सुरक्षा
रही है । अब जब दर्शन करने का अवसर आये । तब नियमो का पालन करते
हुए दर्शन करे । जिससे अपनी तथा दूसरे की सुरक्षा में विघ्न न आ सके ।
सभी भक्तो को भगवान श्री स्वामिनारायण बल-बुद्धि प्रदान करे । इसी
प्रार्थना के साथ जयश्री स्वामिनारायण ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०२०)

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर पाटोत्सव अवसर पर पधरामणी (आगमन)

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर (नूतन मंदिर) ध्रांगध्रा मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा हेतु पधरामणी (आगमन)

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा (पंचमहाल) रजत शताब्दी पाटोत्सव के अवसर पर पधरामणी (आगमन)

विशेषः ता. २२-०३-२०२० से कोरोना वायरस के कारण कोई समैया-पाटोत्सव, पारायण, सभा, पधरामणी स्थागित किया गया है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में नये महंत स्वामी की नियुक्ति

समस्त सत्संग को सहर्ष अवगत किया जाता है कि श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का विश्व में सर्व प्रथम महामंदिर कालुपुर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में सम्प्रदाय के प्रखर विद्वान कथाकार मूर्धन्य संत पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री निर्गुणदासजी गुरु स.गु. स्वामी नारायणसेवादासजी (श्री सहजानंद गुरुकुल - असारवा) की नियुक्ति की जाती है।

अपने दूसरे शिखरबद्ध मंदिर के नव पूज्य महंत स्वामीश्री की सूची

नारणपुरा (अहमदाबाद) श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत स्वामी पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी नरनारायणदासजी (जेतलपुर महंतश्री) और संप्रदाय के विद्वान कथाकार मूर्धन्य पूज्य स.गु. शास्त्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (पी.पी. स्वामी) गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी नरनारायणदासजी (जेतलपुर)।

कांकरिया-रामबाग श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत स्वामी पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी हरिॐप्रकाशदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी माधवप्रसाददासजी।

मथुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत पू. स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी।(जेतलपुर)।

अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत पू. स.गु. शास्त्री स्वामी अखिलेश्वरदासजी गुरु स.गु. स्वामी देवप्रसाददासजी।

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत पू. स.गु. शास्त्री स्वामी हरिप्रकाशदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणप्रसाददासजी (मकनसर मंदिर महंतश्री)।

कोटा (राजस्थान) श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत पद पर पू. स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी गुरु स.गु. स्वामी बलदेवप्रसाददासजी और पू. स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी।

हरिद्वार (उत्तराखंड) श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत स्वामी पू. स.गु. स्वामी भक्तिकिशोरदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी।

श्री स्वामिनारायण भगवाननी स्तुति प्रार्थना

– महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (कालुपुर, अमदावाद)

॥ मंगलाचरण ॥

स्वीये धाम्नि सदाऽक्षरे परतरेसंसेवितांघ्रिद्वयै भक्तैर्ब्रह्मशरीरिरिभिर्यः उरुधा वेदान्तवेद्यः प्रभुः ॥
नैकाण्डोद्भवपालनादिकरपुंमायानियन्ता स्वराट् कारुण्याम्बुनिधिर्नमामितमहं श्रीस्वामिनारायणम् ॥१॥
त्वं साक्षात्पुरुषोत्तमोऽसि परमं ब्रह्माऽक्षरः श्रीकृष्णो हरिकृष्ण आदिपुरुषो धर्मात्मजः श्रीहरेः ॥
हे नारायण वासुदेव परमानंद प्रभो सत्पते मायाधीश बृहत्पुरस्थ नृतनो श्रीस्वामिनारायणः ॥२॥
योऽन्तः स्थित्वाऽऽत्मवर्गं नियमयति यतः सर्वकार्यस्य सिद्धिः यश्चाराध्यः समस्तैर्निगमनिगदतैः कर्मभिस्तत्तदात्मा ॥
त्रायन्ते श्रूयमाणः परमखनिलयो यः परंब्रह्म कृष्णो विश्वाविर्भावहे तुः स जयतु भगवान् स्वामिनारायणोऽयम् ॥३॥
श्रीमन्मंगल मूर्तिमार्तिशमनं मालां करे तौलसीं दक्षे सूक्ष्मवलक्षसान्द्रवसनान्याबिभ्रतं सर्वदा ॥
चारुस्मैरमुखाम्बुजं लसदुरः श्रीवत्सलक्ष्मांकितं ध्याये भूषणभूषणांगमनिशं श्रीस्वामिनारायणम् ॥४॥
पातुं सद्धर्ममार्गं निरतिशयदया पूर्णमानंदमूर्तिं धर्माद्भक्तौ नृ मूर्त्याकलिकलुषहरं वीक्षणा ब्रह्मणोयम् ॥
धाम्नचास्यां प्रजातं भुविसम जनतातापहरं नमामि ह्यज्ञानध्वान्तसूर्यं सुरनरसुनतं श्रीस्वामिनारायणं तम् ॥५॥
श्रीमत्स्वीयपदाब्जचिन्तनविधिं लोके स्वतो दुष्करं दृष्ट्वाऽऽविष्कृतरम्य मूर्तिमखिलानुद्धारयन्तं श्रितान् ॥
मायावाद कुतर्क विभ्रमहरं श्रीमत् कृपावीक्षणात्तं ध्यायामि सदा जगद्गुरुमहं श्रीस्वामिनारायणम् ॥६॥
श्रीधार्मिः पुरुषोत्तमो गुणनिधिर्यो ब्रह्मधामेश्वरो मुक्तैर्जुष्टपदाम्बुजो वरतरैश्वर्यैरुपेतः प्रभुः ॥
अन्तर्याम्यखिलात्मनां भवहरः सर्वेश्वराधीश्वरस्तं ध्यायाम्यवतारिणं मुनिपतिं श्री स्वामिनारायणम् ॥७॥
नित्यं संरममाणमक्षरपदे ब्रह्मात्ममुक्तव्रजैः श्रीराधादिसमर्चितांघ्रिकमलं नैकाडनाथानतम् ॥
छन्दः शेषमहेशगीतयशसं योगीन्द्रहृच्चिन्तितं ध्यायामीष्टमहं मुदाऽखिलगुरुं श्री स्वामिनारायणम् ॥८॥
वेदाः स्तोतुं प्रवृत्ताः यदनवधिमहानंदमालक्ष्य दूरात्, प्रत्यावर्तन्त सर्गस्थितिलयमखिलस्यास्य येनामनन्ति ॥
स्थाने दिव्येऽक्षरे यो निवसति सततं नित्यमुक्तानुषक्तः सोऽयं कृष्णः कृपालुः स्वयमवति निजान्स्वामिनारायणो नः ॥९॥
श्रीजुष्टे वटपत्तने नृपपथे भूपस्य हर्म्यांगणे नागेन्द्रोपरिरुढमीडितपदं भूपेन भक्त्या भृशम् ॥
नानारत्नमणीन्द्रमौक्तिककलितं हेमोद्भवं भूषणं मूर्धाग्रे दधतं दधामि हृदि तं श्री स्वामिनारायणम् ॥१०॥
योऽसंख्येयमनोज्ञ दिव्यगुणयुक् सच्चित्सुखात्मा स्वरान्मुक्तव्रातसमर्चितांघ्रिकमलो राधारमाधीश्वरः ॥
वेदैर्मूर्तिधरैः स्तुतोऽक्षरपदे जुष्टोऽधिराजश्रिया तुष्यान्नः परमेश्वरोऽखिलगुरुः श्रीस्वामिनारायणः ॥११॥
यः साक्षाद्भगवान् क्षराक्षरपरः कृष्णः स एव स्वयं, भक्तौ धर्मतः आस भूरिकृपया श्री स्वामिनारायणः ।
मानुष्ये भुवि नाट्यन्निजजनाचार्यत्वधर्मे स्थितः, कृष्णं प्राह परोक्षवन्नतु ततोऽन्यः सोऽस्ति यत्स स्वयम् ॥१२॥

सत्शास्त्रो में परमात्मा को कई नामो से सम्बोधित किया गया है । उसमें कई दिव्य गुण युक्त नाम है । और कई नाम उनके लीलाचरित्र के उपर से नाम रखे गये है । कुछ नाम शास्त्रीय आधार पर प्रसिद्ध हुई है । उसमें षडक्षरी महामंत्र स्वामिनारायण नाम भी शास्त्रीय आधार पर भगवान श्री स्वामिनारायणने स्वयं अपना नाम जगत के जीवो के कल्याण हेतु प्रसिद्ध किये । जब से इस महामत्र की सिद्धि हुई तब से पाँच सौ परमहंस उस नामसे भगवान श्रीहरि की प्रार्थना स्तुति करना प्रारम्भ कर दिये । उसमें से नंद संतो के मुख से जो स्तुति के शब्द निकले है । उसमें से कई श्लोक गाने योग्य तथा नित्य स्मरण करने योग्य है । उन शब्दो के अर्थ पर विचार करे ।

स्वीये धाम्नि सदाऽक्षरे परतरे संसेवितां घ्रिद्वयै भक्तैर्ब्रह्मशरीरिभिर्यः उरुधा वेदान्तवेद्यः प्रभुः ॥
नैकाण्डोद्भवपालनादिकरपुंमायानियन्ता स्वराट् कारुण्याम्बुनिधिर्नमामितमहं श्रीस्वामिनारायणम् ॥१॥

भगवान श्री स्वामिनारायण के साथ अखंड अनेक साथ लेखक (सहायक) सेवा में रहने वाले सद्‌गुरु श्री शुकानंदमुनि षडक्षरी महामंत्र के साथ स्तुति किये है । जो शार्दुल विक्रिडित संस्कृत वन्द में वर्णित है । और कहते है - हे प्रभु श्री स्वामिनमारायण मैं आप के दिव्य चरणो में झूककर प्रणाम वंदन करता हूँ । जिस चरण की सेवा में सदैव सर्वकाल ब्रह्मरुप हुए अक्षर अक्षर महामुक्त सदैव आप के दिव्य अक्षरधाम में आत्याधिक प्रेम पूर्वक भक्तिभाव और श्रद्धा से युक्त होकर आप के दोनो चरणो की पूजा-वंदना अखंड रुप में करते रहते है । क्योकि उनके हृदय में आप का सत्य स्वरुप का ज्ञान प्रगट है । जो केवल वेदांत शास्त्र से मिल सकता है । यह अलौकिक ज्ञान आप की कृपा से मिली हुई है । अनंतकोटी ब्रह्मांड में आप ही अकेले है । जिससे समस्त विश्व के ब्रह्मांड की उत्पत्ति और प्रलय होती है । आप ही समस्त ब्रह्मांड का नियंत्रण करते है । और आप तो स्वयं आप के उपर कोई नियमन करने वाला नही है । स्वयं का नियमन करके संसार के जीवो पर दया-करुणा करके उन्हें दिखे ऐसा रुप धारण करते है । ऐसे भगवान श्री स्वामिनारायण इस कलिकाल में सभी को अपना दिव्य दर्शन देते है ।(१)

त्वं साक्षात्पुरुषोत्तमोऽसि परमं ब्रह्माऽक्षरः श्रीकृष्णो हरिकृष्ण आदिपुरुषो धर्मात्मजः श्रीहरेः ॥
हे नारायण वासुदेव परमानंद प्रभो सत्पते मायाधीश बृहत्पुरस्थ नृतनो श्रीस्वामिनारायणः ॥२॥

श्रीहरि के स्वरुप का और उनके सर्वोपरी की द्रढ निश्चयता जिसके हृदय में हमेशा रहती है । ऐसे पंडित सद्‌गुरु नित्यानंद मुनि भी भगवान श्रीहरि के षडअक्षरी महामंत्र स्वामिनारायण नाम की महिमा गाते है । उसका अर्थ समझने का प्रयास करते है । - हे प्रभु हमारे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण आप जो यह मानवदेह धारण करके विचर रहे है । आप साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण है । इस स्वरुप को सत्शास्त्र, वेद, उपनिषद ऋषि मुनि परम ब्रह्म कहते है । श्रीकृष्ण नाम से श्रीमद् भागवत में महापुराणो में कहे है । हरिकृष्ण कहते है ये आप ही है । वेदो में जिसे आदि पुरुष कहते है । वह भी आप ही है । धर्म के पुत्र ऋषि रुप नरनारायण कहते है । वे भी आप ही है । श्रीहरि शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण करके ध्रुव को दर्शन देने वाले आप ही है । नारायण नाम लेने से तर जाने वाले अजामिल के तारक आप ही है । सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त जिसे उपनिषद - ईशावास्यमिंद वह आप ही है । सतचित आनंद स्वरुप भी आप है । सर्व नियन्ता प्रभु भी आप ही है । सत्पुरुष नियंता और त्रिगुणमयी मायानियंता और उसके अधिपति आप ही है । जो सदैव अखंड है । ब्रह्मपुर धाम अक्षरधाम में स्थिर आप ही है । इस कारण से आप नरदेह धारण करके स्वामिनारायण नाम से दर्शन देते है ।(२)

योऽन्तः स्थित्वाऽऽत्मवर्गं नियमयति यतः सर्वकार्यस्य सिद्धिः यश्चाराध्यः समस्तैर्निगमनिगदतैः कर्मभिस्तत्तदात्मा ॥
त्रायन्ते श्रूयमाणः परमरवनिलयो यः परंब्रह्म कृष्णो विश्वाविर्भावहे तुः स जयतु भगवान् स्वामिनारायणोऽयम् ॥३॥

भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा दिये गये सर्व जीव हित वाले संदेश श्री शिक्षापत्री जो खुद परमब्रह्म परमात्मा के मुख कमल से निकलकर परावाणी जिसे संसार के साधारण जीव सरलता से समझ ले ऐसा न होने पर, विद्वानो ने बडे भाष्य की रचना किये है । असंख्य शास्त्रोचित प्रमाण देकर भाष्य लिये है । उसमें श्रीहरि की जय जयकार कैसे होती है । जिसमें षडक्षरी महामंत्र स्वामिनारायण नाम की स्तुति करता है । उसके शब्दो का भावार्थ समझने का प्रयत्न करे ।

जिन्हे समस्त शास्त्र अन्तर्यामी कहता है । जीव-प्राणी मात्र के हृदय में विराजकर उसका नियमन करते है । उनके द्वारा सम्पूर्ण जगत की उत्पत्ति स्थिति लय आदि कार्य पूर्ण होते है । जीवो का कर्म उनसे ही होता है । समस्तवेद, शास्त्र, आगम-निगम उनकी पूजा करने को कहते है । सभी जगत के जीव प्रभु की आराधना करते है । जब समग्र ब्रह्मांडो का प्रलय होता है । वह परमात्मा अकेले रहते है । और उनका गुण गाया जाता है । ऐसा वेदो में सर्वत्र वर्णित है । वे ही परमब्रह्म परमेश्वर भगवान श्री कृष्ण है । जो समस्त विश्व के अनंत कोटि ब्रह्मांड के प्रलय उत्पत्ति के कारण है । कर्ता भी वही है । उस ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण का इस कलियुग में जय-जय कार हो रहा है । (३)

श्रीमन्मंगल मूर्तिमार्तिशमनं मालां करे तौलसीं दक्षे
सूक्ष्मवलक्षसान्द्रवसनान्याबिभ्रतं सर्वदा ॥
चारुस्मेरमुखाम्बुजं लसदुरः श्रीवत्सलक्ष्मांकितं ध्याये
भूषणभूषणांगमनिशं श्रीस्वामिनारायणम् ॥४॥

अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति सर्वावतार के अवतारी परमब्रह्म परमात्मा पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण के स्वरुप का ध्यान करने के लिये । कैसे मूर्ति का चिन्तन करना चाहिए । यह इस मांगलिक श्लोक में वर्णित है । उन शब्दो के भावार्थ समझे - श्रीमन अथ्यंत शोभायुक्त, बहुमूल्य रत्न मोती, माणिक से बने स्वर्णाभूषण धारण किये है । जीव मात्र का सदैव मंगल चाहने वाले । जन्म-मृत्यु के भय को शांत करने वाले । शांत चित्तवाले अपने दाहिने कमलवत हाथो में तुलसी से निर्मित मणका युक्त माला सदैव धारण करने वाले है । एकदम धवल चमकदार पवित्र वस्त्र धारण करने वाले है । पूर्णिमा के समान मुख कमल वाले मंद-मंद हास्य करने वाले है । जिसके हृदय के उपर स्वर्णरत्न जडित हार-पुष्पो से भरा हुआ है । वक्ष स्थल पर श्रीवत्स का चिन्ह अंकित है । अपने मंत्रो को आभूषण से विभूषित किये है । ऐसे भगवान श्री स्वामिनारायण के स्वरुप का ध्यान दिन-रात हमेशा करता रहूँ ।(४)

पातुं सद्धर्ममार्गं निरतिशयदया पूर्णमानंदमूर्ति
धर्माद्भक्तौ नृ मूर्त्याकलिकलुषहरं वीक्षणा ब्रह्मणोयम् ॥
धाम्नचास्यां प्रजातं भुविसम जनतातापहरं नमामि
ह्यज्ञानध्वान्तसूर्यं सुरनरसुनतं श्रीस्वामिनारायणं तम्
॥५॥

अपने ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणो में दंडवत किस प्रकार करना चाहिए । उसका वर्णन सद्‌गुरु महानुभावानंद अपनी रचना श्रीहरिकृष्णलीलामृत में इस प्रकार किये है । हे प्रभु आप तो अतिशय दया करुणा के साक्षात् मूर्तिमान सागर है । संसार के जीवो को अधर्म मार्ग से रोकने के लिये । और सनातन भागवत सद्‌धर्म की रक्षा हेतु स्वयं पूर्ण आनंद मूर्ति है । फिर भी मृत्यु लोक में मनुष्य जैसे मानव रुप माता भक्ति देवी के उदर से धर्म ऋषि हरि प्रसाद विप्र के आँगन में मानव रुप धारण करके प्रगट हुए । जीवो के हृदय में से कलियुग के बडे दोष काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि शत्रुओ को दूर करकें । उन्हे परम भागवत भक्त बनाकर अपने दिव्य अक्षरधाम में ले जाते है । मनुष्य जैसा दिखकर दर्शन देते हो । लेकिन आप तो परम ब्रह्म परमेश्वर साक्षात् ब्रह्म अक्षरधाम से यहाँ प्रगट हुए है । पृथ्वी पर समान देह धारण किये है । प्रजा के त्रिविधताप को दूर करने के लिये प्रगट हुए है । जीवो के हृदय में अनादि काल से रहे हुए । अज्ञानरुपी अंधकार को जैसे घनघोतम को सूर्य दूर कर देता है । उसी प्रकार आप सभी के अहंकार को नाश करते है । इस कारण से बड़े से बड़े देवता-ऋषि, मनुष्य आप के चरणो का साष्टांग वंदन करते है । हमारे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण मैं भी उसी प्रकार आपके चरणो की वंदना करता हूँ ।(५)

श्रीमत्स्वीयपदाब्जचिन्तनविधिं लोके स्वतो दुष्करं
दृष्टऽवाऽऽविष्कृतरम्य मूर्तिमखिलानुद्धारयन्त्तं
श्रितान् ॥
मायावाद कुतर्क विभ्रमहरं श्रीमत् कृपावीक्षणात्तं
ध्यायामि सदा जगद्गुरुमहं श्रीस्वामिनारायणम् ॥६॥

जगत के नियंता, जगतकर्ता परमब्रह्म परमेश्वर के स्वरुप का चिंतन करना, तथा उनके श्री चरणो में स्थित सोलह प्रतीको का चिंतन करना । यह कैसा होगा ? यह संसारियो के लिये अति दुर्लभ है । इसकी कल्पना करना कठिन है । इसका चिंतन कैसे कर सकते है । और जीवो को मोक्ष विना प्रभु के नाम लिये असम्भव है । इन सभी कठिनाईयो को देखकर स्वंय परम ब्रह्म परमात्मा अपने आश्रित भक्तो के लिये सहज हो, मनुष्य का रुप धारण करके दर्शन देते है । योग्य स्वरुप का दर्शन देते है । ऐसे दयालु कृपा के सागर जगत को दिव्य ज्ञान देने वाले जगत के जीव मात्र के गुरु और हमारे ईष्ट परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण को मै अन्तःकरण से ध्यान करता हूँ ।(६)

श्रीधार्मिः पुरुषोत्तमो गुणनिधिर्यो ब्रह्मधामेश्वरो
मुक्तैर्जुष्टपदाम्बुजो वरतरैश्वर्यैरुपेतः प्रभुः ॥
अन्तर्याम्यखिलात्मनां भवहरः सर्वेश्वराधीश्वरस्तं
ध्यायाम्यवतारिणं मुनिपतिं श्री स्वामिनारायणम् ॥७॥

सनातन भागवतधर्म जीवो को मोक्ष प्रदान करने वाला, धर्मो को धारण करते उसकी शोभा बढाने वाला उसे सुंदर और कल्याणकारी बनाने वाला है । इस कारण से श्रीधार्मि ऐसे भगवान श्री पुरुषोत्तम, पुरुषो में अति श्रेष्ठ है । इस लिये पुरुषोत्तम है । सभी सद्‌गुण जिसमें स्थिति है । जिनके दो चरणो में ब्रह्मांड के अधिपतियों ब्रह्मधाम में रहने वाले अक्षरमुक्त अखंड सेवा परायण करते है । श्रेष्ठत्तम प्रकार के ऐश्वर्य उनके चरणो की सेवा से मिल सकता है । वे सभी के नियन्ता प्रभु है । अनंत कोटि ब्रह्मांड के असंख्य जीवो के अन्तःकरण में रहकर उसका नियमन करने वाले उन्हे जन्म-मृत्यु के भवसागर से मुक्त करने वाले है । सर्वावतारी पाँच सौ परमहंसो मुनियो के अधिपति उपास्य ऐसे भगवान श्री स्वामिनारायण का मैं हृदय में ध्यान करता हूँ ।(७)

नित्यं संरममाणमक्षरपदे ब्रह्मात्ममुक्तव्रजैः
श्रीराधादिसमर्चितांघ्रिकमलं नैकाऽनाथानतम् ॥
छन्दः शेषमहेशगीतयशसं योगीन्द्रहृच्चिन्तितं
ध्यायामीष्टमहं मुदाऽखिलगुरुं श्री स्वामिनारायणम्
॥८॥

नित्य मुक्तो, अनादि मुक्तो जो सदैव उनको प्राप्त अक्षर ब्रह्मात्मक अक्षरमुक्त पद में आसक्त रहने वाले है । तथा ये लोग ब्रह्म स्थिति को प्राप्त करके महामुक्तो का जो समूह है । जिसमें मुख्य श्रीराधा रमा आदि है । जिसके चरण की वंदना करते है । कई प्रकार के लोगो के अधिपति जिसके चरणो में झुककर साष्टांग प्रणाम करते है । और समस्त वेद शास्त्र बड़े-बड़े कवि ऋषि साक्षात् शेषनारायण महादेव और देवता जिसका यश गान करते है । अष्टांग योग को सिद्ध करने वाले योगी अपने हृदय में अखंड चिंतन करते है । वे सभी चेतन-अचेतन के गुरु ऐसे हमारे ईष्टदेव उपास्य परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण का मै हृदयपूर्वक वंदन करता हूँ ।(८)

वेदाः स्तोतुं प्रवृत्ताः यदनवधिमहानंदमालक्ष्य दूरात्,
प्रत्यावर्तन्त सर्गस्थितिलयमखिलस्यास्य येनामनन्ति॥
स्थाने दिव्येऽक्षरे यो निवसति सततं
नित्यमुक्तानुषक्तः सोऽयं कृष्णः कृपालुः स्वयमवति निजान्स्वामिनारयणो नः ॥९॥

अक्षरमूर्ति सद्गुरु श्री गोपालानंद स्वामी अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीपुरुषोत्तम नारायण के षडक्षर महामंत्र श्री स्वामिनारायण नाम से उनकी स्तुति प्रार्थना करने के लिये चार वेद ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद साक्षात मूर्ति वान होकर प्रयास करे । तब भी आप की महिमा तथा विस्तार को माप नही सकते है । यह केवल विचार करते है कि जहाँ से प्रलय और निर्माण दोनो होता है । वह स्वयं आप है । सभी सम्बोधित होने वाले नाम आप ही है । अक्षरधाम में नित्यमुक्त तथा अक्षरमुक्तो की सेवा आप स्वीकार कते है । वही परमब्रह्म परमात्मा आप कलियुग में प्रगट हुए है । मार्कण्डेय महामुनि श्रीकृष्ण जैसा सार्थक नाम दिये है । आप कृपा करके अपने दिव्य अलौकिक नाम षडक्षर महामंत्र श्री स्वामिनारायण अपने आश्रितो के उपर करुणा किये है । हे मेरे ईष्टदेव हमारे उपर भी कृपा करें ।(९)

श्रीजुष्टे वटपत्तने नृपपथे भूपस्य हर्म्यागणे
नागेन्द्रोपरिरुढमीडितपदं भूपेन भक्त्या भृशम् ॥
नानारत्नमणीन्द्रमौक्तिकलितं हेमोद्भवं भूषणं मूर्धाग्रे
दधतं दधामि हृदि तं श्री स्वामिनारायणम् ॥१०॥

मानव शरीर धारण करके जब श्रीहरि पृथ्वी के उपर घुम रहे थे । तब कई गाँव, नगर में जाते है । कभी-कभी लोग स्वयं बुलाकर ले जाते थे । इस प्रकार भगवान श्री स्वामिनारायण ने वडोदरा के महाराज गायकवाड श्री सयाजीराव के आमंत्रण से वडोदरा नगर गये थे । नगरवासियो को हरि दर्शन कैसा हुआ । उसका वर्णन इस श्लोक में आता है । उसका आइये भावार्थ समझते है । श्री अर्थात लक्ष्मीजी धन, सम्पत्ति, वैभव, सुख, समृद्धि नगर में जुडी है । इस नगर को छोडकर नही जा सकती है । वडोदरा शहर के मुख्य मार्ग पर राजा का राजमहल तथा उसके सामने अच्छी सजावट है । इसी जगह पर महाराज को हाथी के उपर बैठाकर श्रीहरि के चरणो की वंदना प्रेमपूर्वक किये थे । कई प्रकार के रत्न जडित आभूषण, हीरा, मोती उनके सामने रखकर धारण करने के लिये प्रार्थना राजाने किया था । ऐसे हमारे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण स्वस्थ की मूर्ति को मैं अपने हृदय में धारण करता हूँ ।(१०)

योऽसंख्येयमनोज्ञ दिव्यगुणयुक् सच्चित्सुखात्मा
स्वराण्मुक्तव्रातसमर्चितांघ्रिकमलो राधारमाधीश्वरः ॥
वेदैर्मूर्तिधरैः स्तुतोऽक्षरपदे जुष्टोऽधिराजश्रिया
तुष्यान्नः परमेश्वरोऽखिलगुरुः श्रीस्वामिनारायणः ॥११॥

भगवान श्री स्वामिनारायण हम सभी के उपर खुश हो उनके लिये इस श्लोक में स्तुति की गयी है । जो परमब्रह्म परमात्मा स्वरुप में मूर्ति में स्थित असंख्य कल्याणकारी दिव्य गुणो से युक्त है । जो सदैव सच्चिदानंद स्वरुप वाले है । अर्थात् सत्य स्वरुप चैतन्य स्वरुप और आनंद स्वरुप मे हैं । ऐसा वेद श्रुति वर्णन करते है । अक्षरमुक्तो का समुदाय उस स्वरुप के चरणो की सदैव पूजा-अर्चना करते है । और राधाजी और लक्ष्मीजी के अधिपति है । ईश्वर है पति है । जिसकी वंदना करने के लिये चारो वेद साक्षात् मूर्तिमान होकर अक्षरधाम के अधिपति पद पर रहकर दोनो के चरणो के अर्चन करते है । वह अक्षरधाम अति सुंदर शोभा से युक्त परमेश्वर भगवान श्री स्वामिनारायण जो समस्त जीवो के गुरु स्थान पर विराजमान है । वे प्रभु हमारे उपर खुश हो । ऐसी प्रार्थना करता हूँ ।(११)

यः साक्षाद्भगवान् क्षराक्षरपरः कृष्णः स एव स्वयं,
भक्तौ धर्मतः आस भूरिकृपया श्री स्वामिनारायणः ।
मानुष्ये भुवि नाट्यन्निजजनाचार्यत्वधर्मे स्थितः, कृष्णं
प्राह परोक्षवन्नतु ततोऽन्यः सोऽस्ति यत्स स्वयम् ॥१२॥

जो अनंत कोटी ब्रह्मांडो के अधिपति परमब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम नारायण अपने दिव्य अक्षरधाम में विराजमान है । जिन्हे पूर्ण रुप से अक्षरमुक्त भी समझ नही सकते है । कलियुग में जीवो के कल्याण के लिये कृपा करके धर्मदेव हरिप्रसाद विप्र के घर भक्ति देवी के आँगन में मानव देह धारण करके प्रत्यक्ष आये है । जिनको संसार में श्री स्वामिनारायण के नाम जाना जाता है । मानव शरीर धारण करके पृथ्वी के उपर विचरण करते साक्षात श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम नारायण स्वयं इस सम्प्रदाय की स्थापना किये । जो स्वामिनारायण संप्रदाय के नाम से जाना जाता है । अपने पवित्र वंश में धर्मवंश, आचार्य पद की स्थापना किये । ये धर्मवंशी आचार्य साक्षात हमारे अपर स्वरुप है । भक्तो के सामने प्रत्यक्ष प्रमाण है । कभी परोक्ष नही ऐसे साक्षात उपासना का सिद्धान्त स्थापित किये है ।(१२)

तीर्थ, क्षेत्र और धाम

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपने सनातन हिन्दु धर्म के ग्रन्थो में तीर्थ, क्षेत्र और धाम की अपरम्पार महिमा का वर्णन किया गया है । सामान्य लोग ऐसा समझते है कि तीर्थ, क्षेत्र और धाम ये सभी एक ही है । लेकिन शास्त्रो का गहन अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि कुछ स्थान को तीर्थ कुछ स्थान को क्षेत्र और कुछ स्थान को धाम के रुप में कहा गया है।

श्रीमद् भागवत के दशवे स्कंद में कथा आती है। श्री बलरामजी तीर्थाटन के लिये निकले तब ''ऋषभाद्रि हरेः क्षेत्रं'' बलरामजी ऋषभ (ऋषभकूट) पर्वत जो हरि का क्षेत्र था । वहाँ गये थे । उसके पश्चात ''गोकणडयं शिवक्षेत्रं'' गोकर्ण (दक्षिण भारत का मलबार क्षेत्र) जो शिवजी का क्षेत्र है। वहाँ गये थे । उसके पश्चात ''मनुतीर्थभुपस्पृश्य'' अर्थात मनु तीर्थ में स्थान करके आगे चल दिये थे । इस बात से यह एक आशय स्पष्ट होता है कि जहाँ पर भूमि की प्रमुखता होती है। उसे क्षेत्र कहते है। जहाँ जल की प्रधानता होती है उसे तीर्थ कहते है । और जहाँ पर भगवान की प्रतिमा (मंदिर) प्रधान होता है । उसे धाम कहा जाता है ।

जहाँ पर विशेष तेजोमय जल हो ऐसे नदी या सरोवर जो महिमा के साथ संलग्न हे। ऐसे पवित्र और शुद्ध स्थल को ''तीर्थ'' कहा जाता है । स्कंद पुराण पद्मपुराण शिवपुराण और महाभारत आदि शास्त्रो में तीर्थो की महिमा विस्तार से बतायी गई है । साथ ही साथ तीर्थयात्रा का महाफल भी बताया गया है। पूरे भारत में तीर्थो की संख्या अनेक है। लेकिन उनमे से अडसठ तीर्थ मुख्य है। स.गु. श्री मुक्तानंद स्वामीने मुदाय की आरती की रचना की है उसमें इस कडी का वर्णन है।

"अडसठ तीरथ चरणे, कोटि गया काशी"

अडसठ तीर्थ में जल की प्रधानता प्रबल है। हरिद्वार, मथुरा, अयोध्या, प्रयाग, ऋषिकेष, द्वारिका, नासिक, उज्जैन, मुक्तिनाथ, अमरनाथ, गयाजी इत्यादि तीर्थ के रुप में प्रसिद्ध है।

क्षेत्र उसे कहा जाता है कि जिसमें जमीन की प्रधानता होती है । उस स्थान पर जाते ही इन्द्रियाँ, अन्तकरण की चंचलता सहजता से विराम में आ जाती है। विषयो में से सतवृत्ति सहजता से पुनः आ जाती है। श्रीजी महाराजने

सारंगपुर के ७ वे वचनामृत में नैमिषारण को लेकर यही बात कहे है। क्षेत्र के विषय में नैमिषारण्य क्षेत्र, कुरुक्षेत्र, सिद्धपदक्षेत्र, पुष्कर क्षेत्र, श्रीरंगक्षेत्र इत्यादि प्रसिद्ध है। श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रन्थ में जेतलपुर को ''नारायणक्षेत्र'' क्षेत्र के रुप में कहा गया है। क्षेत्र को अरण्य शब्द से भी परिभाषित किया जाता है। अरण्यो की संख्या सात है। नैमिषारण्य, चंपारण्य, दंडकारण्य, धर्मारण्य, काम्यकारण्य, बद्रिकारण्य, सिद्धारण्य है।

धाम उसे कहा जाता है। जहाँ पर भगवान के स्वरुपो (मूर्तियों) की विशेषता हो। जहाँ पर भगवान स्वयं मूर्ति रुप में बिराजमान हो। जहाँ पर स्वयंभु प्रगट हुए हो। उनके दर्शन हेतु लाखो लोग प्रभावित होकर आते हो। दर्शन करते ही भक्त तथा दीन दुःखी सभी के त्रिविधकष्ट, पाप नष्ट हो जाये। दर्शनार्थी की परम शांति का अनुभव हो जाये। हमारे भारत देश में चार धाम महत्वपूर्ण है। उत्तर भारत में बद्रीनाथधाम, जहाँ पर साक्षात् श्री नरनारायण भगवान मूर्तिवत विराजमान है। पूर्वी भारत में जगन्नाथधाम, जिसे पुरुषोत्तमधाम भी कहते है। स्वयं श्री कृष्ण भगवान जगन्नाथ रुप में भाई बलदेवजी, बहन सुभद्राजी के साथ विराजमान है। दक्षिण भारत में रामेश्वर धाम स्थित है। जहाँ पर सदाशिव भगवान की स्थापना श्रीरामजीने किया था। और पश्चिम भारत में द्वारिकाधाम आता है। जहाए पर स्वंय भगवान द्वारिकाधीश श्री रणछोडरायजी के रुप में विराजमान है। जहाँ-जहाँ पर भगवान की मूर्ति की प्रधानता है उसे धाम कहा जाता है। हमारे सनातन धर्म ग्रन्थो में सात पुरि को भी धाम बताया गया है। जिसमें तीन में विष्णु भगवान तथा तीन में शिवजी की प्रधानता है। तथा एक में दोनो की प्रधानता है। अयोध्या, मथुरा और द्वारिका में प्रधानता है। भगवान विष्णु हरिद्वार, काशी और अवंतिका (उज्जैन) में शिवजी की प्रधानता है। उस में साँतवी पुरी कांची जो शिवकाशी और विष्णुकाशी के रुप में जानी जाती है। जिस में दोनो की प्रधानता है।

अपने श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय में स्वामिनारायण भगवान ने स्वयं के हाथो द्वारा मूर्तियों की स्थापना किये। जिसमें नव धाम प्रसिद्ध है। जिस में भगवानि स्वयं मूर्ति में साक्षात् विराजमान है। अहमदाबाद, भुज, मूली, वडताल, जेतलपुर, धोलेरा, धोलका, जूनागढ और गढडा ये नवधाम है। जिसका वर्णन सम्प्रदाय के मुख्य मुख्य शास्त्रो में किया गया है।

कुछ स्थान ऐसे है जहाँ पर जल और थल दोनो का समावेश दिखाई देता है। जिसे ''तीर्थक्षेत्र'' कहते है। जिसे स्कन्धपुराण में अति महत्व दिया गया है। और यह बात श्रीजी महाराजने वचनामृत में भी कहे है।

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति।
तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति॥

(स्कंद पुराण २/५/७)

अन्य स्थान पर किये गये पाप तीर्थक्षेत्र में समाप्त हो जाते है। लेकिन तीर्थक्षेत्र में जाकर यात्रा करने से वह पाप वज्र लेप की तरह हो जाता है। वह पाप कभी नष्ट नही होता है।

जिस स्थान पर जल, भूमि और भगवान की मूर्ति इन तीनो को समन्वय हो, इसके सामने विश्व में कोई पवित्र नहीं है। इस प्रकार तीनो विभाग को समझकर बाद में वहाँ की यात्रा की जाय तो यात्रा वास्तव में सफल होती है। और अनंत पुण्य फल की प्राप्ति होती है।

कोटा (राजस्थान) श्री नरनारायणदेव देश के अर्न्तगत नूतन यात्री भवन कार्यरत हुआ

श्री नरनारायणदेव देश पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव देश के अर्न्तगत कोटा (राजस्थान) नया यात्रिक भवन सर्वोपरि छपैयाधाम बाय रोड दर्शन जाने वाले यात्रीयो के रहने-भोजन व्यवस्था की आधुनिक सुविधा उपलब्धहै। यात्री हरिभक्त अवश्य लाभ प्राप्त करे।

उसी प्रकार कोटा शहरमें अध्ययन हेतु रहने वाले विद्यार्थी हरिभक्तो को रहने-भोजन की सुविधा प्रदान की जाती है।

-: सम्पर्क :-
मगनभाई - ९०७९७५१७३७
श्री स्वामिनारायण मंदिर, महालक्ष्मीपुरम् बारा रोड, सिंधानिया स्कूल के सामने, बोर खंडी कोटा (राजस्थान)
मो. : ९७७३२२९९६९८

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुरव से अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

वचनामृत (२७३) महोत्सव के अवसर पर ता. २६-०२-२०२० श्री नरनारायणदेव के १९८ वें पाटोत्सव के प्रासांगिक सभा (कालुपुर मंदिर) : श्री नरनारायणदेव तपस्या करते है । और हम लोग लड्डू खाते है । बड़े संत पीछे बैठे है । यहाँ पर जो भी संत-भक्त बैठे है वे सभी महाराज के चरणो में विराजमान है । देव के है । वे भी महाराज के चरणों में विराजमान है । देव के है । वे भी महाराज के माला के दाने है । महाराज से कोई पूछा आप किसकी माला फेरते है । महाराज क्या कहते थे ? अपने प्रिय भक्तो के नाम बोलते है । देव का सानिध्य बहुत महत्वपूर्ण है । हमलोग जब पाटोत्सव के दिन अपने मस्तक को देव के सामने चरणो में झूकाने से एक दिव्य अनुभव प्राप्त होता है । जिसका शब्दो में वर्णन नही कर सकते है । देव के चरणो में अति आनंद प्राप्त होता है । कच्छ, झालावाड, उत्तर गुजरात, पंचमहाल, काठियावाडी भक्त लोग यहाँ आये है । जो देव के है । वे सभी यहाँ बैठे हुए है । देव की महिमा बताना नही पडता है । यह महिमा महाराजने अपने मुख से कहे है । देव के दलान के उपर खडे होकर महारजा बोले है । इसमें नरनारायणदेव और हमारे में इंच मात्र फर्क मत रखियेगा । पूर्ण विराम । इसमें अधिक-कम नही है । इस भूमि पर महाराजने रमण किया है । लीलाचरित्र किया है । सभा किये है । और दो शताब्दी से यहाँ पर महाराज के भजन, कथा, वार्ता एवम् उत्सव हो रहे है । इस पुण्यस्थल पर हम सभी बैठे है । इससे अधिक भाग्यशाली कौन होगा ? दो शताब्दी पूर्व अर्थात् देव की स्थापना से पूर्व महाराजश्री आये होगे । कथा होती रही होगी । तत्काल शायद न प्रारम्भ हो सका हो । इस लिये अपने को निश्चित रखे । संसार के वातावरण का प्रभाव न पडे इसका ध्यान देना होगा ।

स्वामीने अभी कोटा मंदिर की बात किये ८०% कार्य आप के पैसे से हो चुका है । मंदिर की तरफ से हमने चेक दिया था । आप सभी के सहयोग से बूंद-बूंद करके सागर भर जाता है । हमे कही माँगने नही जाना पडता है। आप के पैसे से सुविधा मिलती है । हरिभक्त ही हमारे पूँजी है । अपने पास दो स्थान ऐसे है । एक महाराज का जन्म स्थल छपैया दूसरा सम्प्रदाय की नींव वाला स्थान (अहमदाबाद कालुपुर मंदिर) अंग्रेज केवल यु.के. में कैथलिक ऐसे कुछ चर्चो के लिये जगह दिये है । इसके अलावा देवालय के लिये जमीन नही दिये है । यह जमीन अंग्रेज देवस्थान के लिये दिये थे । आवश्यकतानुसार लोग ले भी गये । फिर भी आप कल्पना करें । जहाँ पर अपना उत्सव चल रहा है । पारसनगर में पौने पाँचसौ करोड से अधिक मूल्य वाली जमीन अपने पास है । इस जमीन के लिये लोग प्रयत्न किये लेकिन प्राप्त हमें हुई । क्योंकि यह हमारे बाप (स्वामिनारायण भगवान) की जगह है । हमारा वजूद उनसे है । यह हमारी जिम्मेदारी में आता है । आज अच्छे से वहाँ उत्सव हो रहा है । क्योकि यह जगह अपनी है । अनाचार से नही प्राप्त करना है। लेकिन कोई गलत करके ले लिया हो तो उससे वापस लेना अपना काम है । महाराज कहे है कि किसी की छाया से दबना नही है । जन्म भूमि छपैया को टूरिजम डिपार्टमेन्ट से भारत स्तर पर कराया गया । यात्राधाम विकास वोर्ड में नही है । एक पत्थर हटाने में तकलीप होती है । रास्ता, प्रकाश की जिम्मेदारी सरकार की होती है । वह पूर्ण करेगी । क्योकि टोल टैक्स भरते है तो सुविधा तो मिलनी चाहिए । यह बात सही है न । अपना स्वार्थ न हो और पुरुषार्थ किया जाय तो देव की कृपा से लम्बे समय

से लम्बित कार्य कम समय में पूर्ण हो जाता है । यह कहकर सभी को आशीर्वाद दिये ।

महोत्सव स्थल (पारसनगर) : अहमदाबाद म्यू. कोर्पोरेशन वेस्ट मैनेजमेन्ट डायरेक्टर, सेन्ट्रलवर्कशाप के निर्देशक तथा वटवा, बोडकदेव, पालडी, ईसनपुर, साबरमती इत्यादि वोर्ड के अधिकारी का स्वागत करके प.पू. महाराजश्री बोले स्वच्छता का अभिगम मुख्यधारा में आता है ।शिक्षापत्री में महाराजश्रीने श्लोक लिखा है । कहाँ थूके कहाँ नही थुके कहाँ कचरा फेके । यह आदमी समझ जाय तो सफाई कर्मचारियो को सरलता रहेगी । यह मानवता का कार्य है । इसके बाद मंदिर की सीढ़ीयाँ आती है । मानवीय लक्षण दिखाने से आगे सब कुछ अच्छा फलीभूत हो जाता है । सभी संत मिलकर अपनी शक्ति विवेक से कर्मठता से मिलकर तथा पर्दे के पीछे रहकर भाई-बहन ने इस मंडप को सजाया है ।नरनारायण देव के पास बहनो को एक बड़ी संख्या बल है। ये लोग मिलकर सकारात्मकता के साथ कार्य कर देती है। और शांतपूर्वक बैठी सांख्ययोगी बहनो को इस सफलता के लिये धन्यवाद देते है।

इस उत्सव से कार्यपूर्ण नही होता है । यह एक नई शुरुआत है। हम मूल सिद्धान्त को कहाँ छू सके है। मेरा उपदेश नही उद्देश्य रहा है कि जड़ को पकडने से डाल स्वयं विकसित होगी । लालजी महाराजश्री सिद्ध किये है कि समय बहुत मूल्यवान होता है । कम समय में तैयारी, उसी प्रकार महोत्सव भी **Short** और **Sweet** है । समय बितने पर इसकी कीमत का पता चलेगा । कम समय में अर्थ समझ में आ जाता है। भगवान मिले है। ये हम सब को सच्चा आनन्द है ।इस आनंद उत्सव में सभी लोग आये है।

ऐप्रोच (बापूनगर) मंदिर के १५ वें पाटोत्सव अवसर पर ता. ०७-०२-२०२० : ठाकुरजी का दर्शन हुआ । अभिषेक का लाभ मिला । आप सबसे मिलकर आनंद आया । पूरे जीवन लोगो लाभ लिया । यहाँ तो भगवान से लाभ मिले इससे अच्छा क्या हो सकता है । (एक हरिभक्त ने मोबाईल से फोटो खीचा, उसके बारे में बोले) अब तो यह लीगल हो गया है । खीचिये, लेकिन खिचना नही भगवान को कुछ हो यह मुझसे नही हो सकता है । लेकिन एक बात याद आती है । कैमेरे की खोज हुई थी । तब एक भाई कश्मीर शिमला और मसूरी धुमे थे । अच्छा हुआ उस समय मोबाईल नही था । चारो तरफ धुमकर फोटो खिचते थे । वापस आने पर लोगो ने पूछा कि कहाँ-कहाँ धुमे । क्या देखे ? वह भाई बोले कैमरा से निकले तो बतायेगे । अर्थात् मोबाईल में न रह जाय देखते रहियेगा । हरि को हृदय में रखना है । इसके लिये यह मेहनत है । इसके लिये मंदिर बने है । और आगे के क्षेत्रो में मंदिर बनाना है । लेकिन आँकडा बड़ा आता है । ये काठियावाडी भक्तो ने मूल्य बढा दिये है । काठियावाड से आकर यहाँ स्थायी हुए । पुरुषार्थ किये । देव को भूले नही, देव की प्रधानता रखे यह महत्व पूर्ण है । संसार में बहुत कुछ बदल जाता है । लेकिन भगवान सनातन है सदैव रहेगे । यह सनातन सत्य है । २५ वर्ष पहले (रजत स्वर्ण जयंती महोत्सव) रात्रि में डेढ बजे आप सब भाई-बहन पुताई कर रहे थे । यह बात याद है न ? हमारी उन्नति और विकास में सेवा बडा कार्य करता है । मात्र आर्थिक सेवा ही नही, शरीर से भी बडी सेवा दी जाती है । अपना ये मंदिर करने वाले, स्वच्छता कर्मचारी कौन-कौन है ? आईये इन्हे हार पहनाये । ये लोग लोग जमीनी सेवा देने वाले लोग है । ये सभी सेवाभावी सभा में पीछे भाग में बैठे है । जो लोग मंदिर में सफाई करते है । ये अपने जन्म-मरण को स्वच्छ करते है । ७० वर्ष केये हरिभक्त उपर चढकर पंखा साफ करते है । ये कृषि में काम किये है । इस लिये यह काम कर ले रहे है । अपने जैसे लोग तो नीचे गिर जाये । जितने स्वच्छता कर्मी है यहाँ पर आ जाये । यह उत्सव अच्छे संपूर्ण हुआ । देव का स्थान स्वच्छ रखना हमारा उद्देश्य है । जो देव के है । वे हमारे है । बालनगरी में सेवा प्रदान करने वाले सभा के बाद ठाकुरजी के बगल में खडे होकर हम साथ में रहकर फोटा खिचवायेगे । आगे के उत्सव में आप लोग सफाई किये है । अपनापन होने पर ही ऐसी सेवा की जा सकती है । सत्संगिजीवन, वचनामृत आदि ग्रन्थो में महाराज अपनापन रखना बताते है । यहाँ पर थोडी गंदगी हो उसने उठाने का मन कहे यही अपनापन है । बहुत सरल व्याख्या है । घर पर यह कार्य तो करते ही है । यह मंदिर भी अपना घर है । इसकी रक्षा करना है । आप सब की सेवा तो है ही । वर्षो से देख रहे है । बहने गादीवालाश्री के साथ रहकर

सेवा प्रदान करती है । घर की जिम्मेदारी सम्भालते हुए । सत्संग कार्य हेतु गाँवो में जाना । इससे बडा त्याग सेवा क्या हो सकती है । यह संस्कार भविष्य की पीढी में आये इस पर ध्यान देना आवश्यक है । ये अपनी जिम्मेदारी भी बनती है।

बात मोबाईल से शुरु हुई थी । वास्तव में समय बहुत कम है । लेकिन जिसको उसका मूल्य नही वही मोबाईल में लिप्त रहते है । दिन-रात मोबाईळ पर काम करते रहते है । आप तो देखे होगे ? कितने लोग सेल्फी लेते रहते है । न जाने क्या करते है ? मैं वस्तु का विरोधी नही हूँ । लेकिन भगवान के प्रति लगाव रहे । ये अच्छी बात है । भगवान, भगवान के भक्त सत्संग के प्रति अपनापन रखे । यह महत्वपूर्ण है । भगवान के प्रति द्रोह रखना भगवान से वह विमुख हो गया । ये महाराज के शब्द है । इन्हे में पूर्ण विराम्म मानता हूँ । इसमें अल्प विराम नही होता है । महाराज के वचन में कमी नही है । इसमें जोड तोड नही किया जा सकता है । महाराज बोले अर्थात् पूरा और फाइनल ये अपना परिवार है । इसके प्रति अपनापन रखे । पूर्ण कोई नही, स्वभाव, प्रकृति सभी कोई नही पूर्ण है । पूर्ण होने वाला सिंहासन पर बैठा होता है । केवल भगवान स्वभाव प्रकृति से पुरे है । सबको स्वभाव ही परेशान करता है । लेकिन सत्संग का असर पडते-पडते स्वभाव प्रकृति से उपर चला जाता है । ये महाराज के वचन है, शब्द है।

मैं अपने आलमारी में पाँच पैसा चिपका कर रखा हूँ । बालपन में एक गाँव में मिला था । तब से में उसे रखा हूँ । कुछ लोग तो पाँच पैसा देखे भी नही होगे । मोटाबापजी द्विशताब्दी में आये एक रुपया की नोट प्लास्टिक में रखे है । यह पाँच जब आया, क्या ? आज दिखाई दे रहा है । उस समय उसका मूल्य था । पिछली जिंदगी (दुनिया) कोई देखता नही है । आज सरलता से मिल जाता है । इसके पाचियाँ के लिये कितना पुरुषार्थ करना पडा होगा । कितना खून-पसीना बहाना पडा होगा । खेत को सींच कर पाँच रुपया प्राप्त किये होगे । सुरक्षित रखनी, उचित जगह पर खर्च करना यह हमारी जिम्मेदारी है । हमारी व्यवस्था पारदर्शक है । ०.३० पैसे का खर्च भी लेखा-जोखा में प्राप्त होगा । मैं इस संख्या को दिखा सकता हूँ । क्योंकि ये आप सभी के मेहनत की धन राशि है।

इसकी चमक मंदिर के दिवाल पर दिखाई देती है । आप की श्रद्धा विश्वास, भजन और अपनापन, मुस्कान वह भगवान के मुखारविंद पर दिखाई देता है । शेष महाराज का स्वभाव कैसा है ? एक रुमाल के वजन भर उन्हे अच्छा नही लगता है । घर से निकलते समय शास्त्र का छोटी पुस्तक दूसरा शालीग्राम लेकर निकले थे । पुस्तक सरयू में खो गयी । शालीग्रामजी रहे । हम लोग प्रतिदिन उनकी पूजा अभिषेक करते है । स्वीकार करना भी बल की बात है।

हमारे इस क्षेत्र में कई मंदिर है । निकोल तरफ असंख्य भक्तजन निवास करते है । वे लोग मंदिर से वंचित न रह जाये तो आगामी महोत्सव से बचत हो या न हो मंदिर निर्माण कर देगे . महाराज मंदिर बनवाये । इसके बाद महाराज ने शुकानंद स्वामी के पास से लिखवाये कागज को हम प्राप्त किये है । हस्त लिखित पत्र है । उसमें महाराजने लिखवाया है । उसको पढकर आश्चर्य होता है । शायद ऐसा सुनने को मिले । लिखे है कि अब कोई मंदिर नही बनाना है । हरिभक्तो का आग्रह हो तो सुख से भजन करने वाला स्थान बनाये । वहाँ पर शिक्षापत्री रखकर और नरनारायणदेव को रखे । अधिक निर्माण से आसक्ति पैदा होती है । लेकिन अच्छा है कि शिक्षापत्री में लिखे गये । महाराज के वचन की सार्थकता पूर्ण हो हम मंदिर निर्माण करते है । जहाँ तक लक्ष्य और सिद्धान्त बना रहे । विस्तार करने में कोई रुकावट नही है । सिद्धान्त दूसरा कुछ भी नही केवल भगवान के सिंहासन पर भगवान ही बिराजमान हो । इस बात का हमेशा ध्यान रखे । यह बात आप को आगे ले जाना है । टी-शर्ट तक सीमित न रखे । तिलक और चाँदला हृदय में रखना होगा।

मुक्तानंद स्वामीने महाराज को सब प्रथम चयन नही किये थे । बाद में यही स्वामी महाराज के सच्चे शिष्य बनकर आरती में लिखे है । पुरुषोत्तम प्रगट का जो दर्शन करेगा । यह प्रगट शब्द भूतकाल नही बताता है । यह वर्तमान है । इस घर घंटी तक बोला जा सकता है । यह भगवान को साक्षात् जान कर लिखा गया है । किसी के कहने पर नही लिखा गया है । इसी पंक्ति में आगे लिखते है कि, काल, कर्म से छूटकर,

पेईज नं. १६

अति सुंदर आशीर्वाद

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद)

भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा निर्मित नव मंदिर में एक मंदिर में शताब्दी के नजदीक पहुंचने वाले एक वयोवृद्ध संत, शरीर में अतिशय वेदना होने के पश्चात भी स्वस्थ चित्त से अपने आसन पर बैठकर शांत चित्त भाव से भगवान श्रीहरि के ध्यान में बैठे है । बगल में उनकी सेवा में रत भगत भक्तचिंतामणि का गान कर रहा है । उसी समय अहमदाबाद से दो-चार संत और पार्षद उस बिमार संत की हाल-चाल जानने हेतु उनके दर्शन के लिये गये । दण्डवत-प्रणाम करके देव की प्रसादी पुष्प माला को देकर उनके पास बैठ गये ।

उस समय हरिभक्त ने उनसे दो हाथ जोडकर नमस्कार किये । और बोले स्वामी ! हमे आप जैसा सत्संग का रंग रहे । भक्ति में लगातार वृद्धि हो, देव और धर्मकुल के प्रति अचल निष्ठा रहे । ऐसा आशीर्वाद प्रदान करे । स्वयं बोलने में असमर्थ होने के बाद भी स्वामी धीरे से बोले, भगत ! क्या आप मोबाईल प्रयोग करते है तो बताये । भगत अपा स्मार्ट फोन निकालकर दिखाये । स्वामीने इतना ही कहे । इसके बदले में सामान्य फोन का प्रयोग करो तो अच्छा रहेगा । मात्र फोन बदलने से आपकी भक्ति और निष्ठा में कोई रुकावट नही आयेगी ।

इस संसार में लगभग एक शताब्दी तक पहुंचने वाले निष्ठावान संत की वाणी और आशीर्वाद आज लगभग सभी युवको को सच्ची राह बताता है । स्मार्ट फोन के उपयोग के लिये यह स्मार्ट उत्तर है । ये वृद्ध संत टेक्नोलोजी के विरोधी नही है । लेकिन उसके उपयोग पर चिंता व्यक्त किये है । उन्होने फोन उपयोग को प्रतिबंधित न करके विवेक पूर्ण उपयोग पर वरियतादिये है । फोन सरलता के लिये है, फैशन और फालतू कार्य के लिये नही है । मोबाईल फोन और इन्टरनेट यह विश्व को जेब में रखने की प्रक्रिया है । विश्व के किसी जगह पैसे भी, फोन से ईच्छित दुनिया नही देख सकते है ।

ग.प्र. १८ में वचनामृत में श्रीहरि कहते है कि अधिक दोष ५ ज्ञान इन्द्रियो का ही है । पाँच ईन्द्रियो द्वारा जो जीव आहार करता है, वह शुद्ध होगा तो अन्तःकरण शुद्ध होगा । शुद्ध अन्तःकरण में अखंड भगवान की स्मृति बनी रहेगी । जो विवेकी होगा उसे यह बात तत्काल समझ में आ जायेगी ।

सम्प्रदाय के संतो की यही महत्ता है । धर्म पालन की चिंता कैसे करे ऐसी बात हरिभक्तो को स्पष्ट बताई गयी है । एक साधारण नियम है । देखे गये को विस्मृत करना कठिन होता है । इस लिये देखना ही नही सर्वोत्तम है । यह सुखी होने का मूल मंत्र है । सम्प्रदाय का इतिहास गवाह है । आत्मानंद स्वामी वर्षो के बाद भी स्त्री के लटके को भूल नही पाये थे । इस लिये हमे सावधान रहना है । अनाश्यक देखना-सुनना वर्जित करे । भक्ति दर्शन में यदि स्मार्ट फोन विषयो की चिंता करवाता हो तो सादा फोन प्रयोग करने की वयोवृद्ध संत की वाणी है ।

प्राचीन संतो की यह दीर्धदृष्टि रही है कि दृष्टि और रस (जीभ) को नियम में रखे । ताकि अन्दर खराब गुण न आये । एकबार अवगुण अंदर आ जाने पर उसे दूर करना कठिन होता है । इस कारण वह घर ही न बनाये सरल है । सम्प्रदाय के विवेक व्यवहार की विधिभी समझे । इस संसार में कोई व्यक्ति बिमार पडता है । तो सगे - सम्बन्धी समाचार पूछने जाते है । वहाँ भीड करके दूसरे की भी सूचना प्राप्त कर लेता है । हरिभक्त जब दूसरे हरिभक्त को देखने जाते है । तो वह उनका दर्शन करने जाते है । कारण राजा के महल को बार-बार नही देख सकते है । उसी प्रकार अक्षरधाम का जीव की शरीर रुपी महल में फिर देखने को नही मिलता है । इस लिये दर्शन के लिये जाते है । बड़े संत या धर्मवंशी आचार्यश्री जब किसी बिमार हरिभक्त के यहाँ जाते है । तब वह दर्शन देने जाते है । क्योकि आचार्यश्री श्रीजी के अपर स्वरुप है । इस प्रकार यह क्रिया समान दिखने पर भी उसके भाव में बदलाव होता है । इस ब्रह्मांड में अनंत कोटि जीव है । लेकिन

सबका प्रारब्धअलग-अलग होता है। क्योंकि कर्म अलग होते है। किसी दो व्यक्ति का चेहरा समान नही होता है। उसी प्रकार मुक्त की भौतिक शरीर एक समान नही होती है। लेकिन अन्तिम अवस्था में जिस जीव को अक्षरधाम में जाना है। पंच भौतिक शरीर द्वारा धर्मकार्य करे। आवश्यक कार्य में सहयोगी बने।

सहेली छे सौ कथनी कहेणी अने महा दुष्कर हे रहेणी।
खरी परीक्षा न थई निदान, असंतने संत दीसे समान ॥

(हरिलीलामृत कलश-७, विश्राम-७०)

इस सुंदर उपदेश और आशीर्वाद को देने वाले संतने लम्बे जीवन काल में कभी स्मार्ट फोन का उपयोग नही किये। लेकिन संसार के नवीनतम प्रवाह से परिचित है। मंदिर के सभा मंडप में नियमित रुप से निश्चित समय पर कई वर्षो तक कथा करने वाले संत ही ऐसी स्पष्ट उपदेशात्मक भाषा का प्रयोग कर सकते है। कोई भी टेक्नोलोजी खराब नही होती है। उसका कहाँ कैसे उपयोग करे यह आवश्यक है। टेक्नोलोजी शिखना आवश्यक है। आदमी को कहा रुकना है। कहाँ से हट जाना है। यह शीख ले तो सबसे अच्छी बात है। धर्म पर रहना, अधर्म पर लटकना, बिषय-वासना से दूर हो जाना देव-आचार्य के पीछे बने रहना अच्छी बात है।

अंत में स.गु. निष्कुलानंद स्वामी के चौसठ पदी शब्द,

पण जावुं जेने प्रभुजी पासे, तेने करवो तपास रे।
अंतर बीजो तजीवो आशे, थई रहेवुं हरिना दास रे ॥

तपस्वी वयोवृद्ध और निष्ठावान धर्म निष्ठ संत के इस आशीर्वाद की वाणी से सभी हरिभक्त हृदय में विचार करके खुश रहे।

अनु. पेईज नं. १४ से आगे

परिवार सहित तर जायेगा। विवेचना करने पर प्रात: कम हो जायेगी। काल कर्म से कोई मुक्त हुआ है। यहाँ पर मुक्तानंद स्वामीने महाराज के पक्ष में गेरेन्टी लिये है। आगे के कर्म माफ। सपरिवार माफ। महाराज के चेष्ठा के पद देखे। हमारे पास जो साहित्य है। वह विश्व में कही नही है। इसका हमे गर्व है। दूसरा गर्व की बात है कि सम्प्रदाय के उत्थान के लिये अंग्रेज सरकार ने अपने कालुपुर मंदिर को सामने से भूमि दिये थे। पहले ९९ वर्ष के लिये भाडा पट्टे पर दिये थे। लेकिन समाज में कहावत प्रचलित है कि मुझे नही करना है। यदि हम लोग इस समय निश्चित है। तो अपने गुरु भगवान क्या बाकी रखे होगे। महाराज बोले हमे जमीन नही चाहिए। जमीन देना ही है तो जब तक सूरज-चन्द्र में प्रकाश रहे तब तक का दस्तावेज करे। ब्रिटेन की रानी ने इसी प्रकार से दस्तावेज भेजी थी। रेलवे की जमीन भी अपने पक्ष में थी। लेकिन अपना देश लोकशाही वाला है। इसके बाद महाराज ने नरनारायणदेव को रखे। वही से प्रारम्भ हुआ।

महाराज छपैया से निकलकर काफी भ्रमण किये। की गाँव में रखे। क्या हमारे पास बल है। वर्तमान समय में साधनं - सुविधा होने के बाद मानव इतना भ्रमण नही कर सकता है। लेकिन यह कार्य महाराजने हमे ज्ञान देने के लिये किये थे। महाराज बोले अच्छे से हमारे कार्य को देखना, तुम कार्य सफल करना। हमे और आप कोईतना ही करना है।

चार महिना पूर्व ३० महीने में ३१ प्रतिष्ठा की गई है। क्या ये गर्व की बात नही है? सभी मंदिर देव के दस्तावेज है। देव का न होने पर मैं प्रतिष्ठा की तारीख भी नही देता हूँ। देव के होने पर कोरा चेक दे देता हूँ। यह वास्तविकता है। हमारी समृद्धि देव है। शास्त्र है। ऐसे सुंदर भगवान है। कभी अपने मन की है। काफी लोग कहते है। अब पहले जैसा नही है। वास्तव में आप पहले जैसे नही रहे है। मुझे कही कभी नही दिखाई दे रहा है। कभी लगी तो उसे एक दिन उपवास करना चाहिए। फराली आटे से नही उपवास करे।

स्वयं सेवको को स्मृति भेट घडी देखकर उस पर से एक बात कहना है। घडी अधिक उपयोगी है। एक सेकन्ड जाने पर वापस नही मिलता है? समय का सदुपयोग करे। जीवन अति छोटा है। शास्त्रो के माध्यम से निष्कर्ष निकालना अपने बस की बात नही है। समय जाने पर कुछ मिलता नही है। अंत में सभी को प्रेम भरा आशीर्वाद दिये थे।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

वर्तमान काल में विषम अवस्था में सरकारश्री के आदेशानुसार प्रत्येक मुँह पर मास्क पहनना नियमता अनिवार्य है । (नही पहनने पर २०० रु. का दण्ड है) हमारे श्री स्वामिनारायण म्यूजियम द्वारा भी प.पू. बड़े महाराजश्री के हस्ताक्षर को शिक्षापत्री के ११९ श्लोक की पंक्ति अंकित किया मास्क प्रकाशित किया गया है।

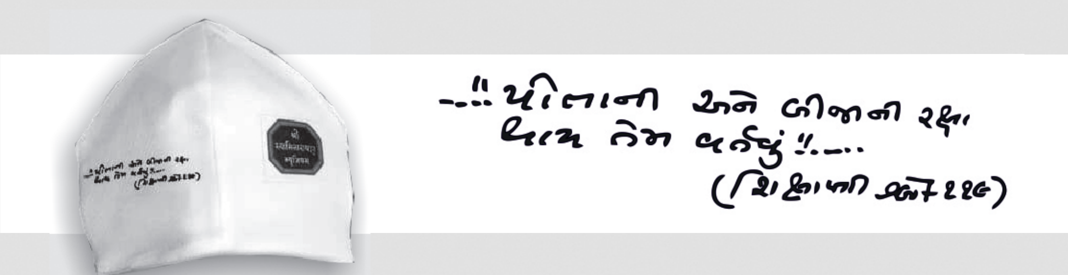

सामान्य मनुष्य मास्क धारण करते छीक, खाँसी आये तब मुख पर रुमाल रखने की घटना बनी होगी । अपने सम्प्रदाय में श्रीजी महाराज के समय की परम्परा है । चेष्ठा के पदो में उनकी नोंधहै ।

"छींक ज्यारे आवे रे, त्यारे रुमाल लई ने,
छींक खाय रे मुख पर आडो दईने..."

और श्रीजी महाराज मुख पर रुमाल रखकर छींकते थे । वह रुमाल अपने म्यूजियममें हॉल नं. १ में दर्शन हेतु रखी गयी है । जब म्यूजियम पूरे रुप से चालू होगी तो आप सभी अवश्य दर्शन करियेगा ।

– प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि

मार्च-२०२०

दि. ०१-०३-२०२० प.भ. आशिष कनुभाई मिस्त्री - नवा वाडज।

दि. ०५-०३-२०२० प.भ. करशन रामजी जेसाणी - यु.के.

दि. १५-०३-२०२० प.भ. हिरलभाई पार्थ सोनी - जयेन्द्रभाई चुनीलाल सोनी - राणीप

जून-२०२०

दि. १७-०६-२०२० प.पू. मोटा महाराजश्री तरफ से।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि

रु। ५,०५,३८८/-	अ.नि. सामबाई डाह्यालाल गामी - स्ट्रेधाम - यु.के.।
रु। ३,६७,०१०/-	लुमवाना प्रीमियर रिसोर्ट - मोम्बासा - आफ्रिका।
रु। ३,६४,४४०/-	अमीस मिलिटेड - मोम्बासा - आफ्रिका।
रु। ३,३७,३४९/-	नार्थ वेस्टर्न युनिवर्सिटी कालेज ओफ सांयन्स एन्ड एप्लायड साईंस के डायरेकटर भीमजीभाई मावजीभाई पटेल - मोम्बासा - आफ्रिका।
रु। २,२०,०००/-	प.भ. करशन जीणारत्ला जेसाणी, ध.प. रतनबाई सुत भीमजी ध.प. धनबाई, पुत्री राधाबेन, प्रेमिलाबेन तथा शमिष्ठाबेन, पौत्र उमंग, ध.प. दीनाबेन, पपौत्री सोहिनी तथा परपौत्र देवेश, ध.प. चाँदनीबेन, परपौत्र हयन, पौत्री कौशल्या और पौत्री फाल्गुनी, भाविक केराई सह परिवार बलदिया-कच्छ।
रु। २,२०,०००/-	प.भ. परबत कानजी वरसाणी, ध.प. प्रेमिलाबेन, सुपुत्री साँ प्रियाबाई सुत नमन, ध.प. मनीषाबेन पौत्री मोक्षवी और प्रौत्र वेद सह परिवार (भूज-कच्छ)।
रु। २,२०,०००/-	प.भ. कांतिलाल मावजी खीमाणी, ध.प. शर्मिष्ठाबेन सुपुत्री नेहा और शैली सह परिवार (दहींसरा - कच्छ)
रु। १,००,०००/-	सौमिल शाह, अर्चना शाह, केरव शाह - यु.एस.ए.।
रु। ११,१११/-	अ.नि. गीताबेन बलदेवभाई पटेल प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर ह. हार्दिक सुहागीया - तथा बलदेलभाई पटेल - नवा नरोडा।
रु।५,१११/-	प.भ. मुकुंदभाई चौधरी - एल.ए. अमेरिका।
रु।५,०००/-	प.भ. मीनाबेन के. जोशी सह परिवार - बोपल।
रु।५,०००/-	प.भ. अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला - मेमनगर।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सद्भाव के साथ समर्पण

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

जेतलपुर के जीवण भक्त इन्हे कौन नही जानता । गरीबी अवस्था में रहते थे । धन से गरीब थे । लेकिन मन के अमीर थे । कई लोग तन से सुखी होते है । और मन से गरीब होते है । कई लोगो के पास अकूत सम्पत्ति होती है । लेकिन चेहरा देखने पर ऐसा ज्ञात होगा कि ये सर्वाधिक कष्ट में है । खाये-पीये सुखी होने पर भी मुख के उपर खुशी नही दिखाई देती है । पता नही क्या लिखाकर लाये हो या किस पर हस्ताक्षर कराके आये है वह उन्हे ही ज्ञात होगा ।

लेकिन जीवन भगत ऐसे नही थे । धन से अधिक गरीब मन से समृध्द्धशाली थे । सदैव आनंदित रहने वाले थे । उनका मन था कि भगवान को कुछ खिलाउ लेकिन संशय में थे । खिलाउ लेकिन क्या ? चना की दाल लाने भर पैसा नही था । घी शक्कर भी नही खरीद सकते थे । संकोच करते हुए घर में पत्नी से बोले पत्नी का दूसरा नाम बुद्धि होता है । भाई जब संकोच में आये तो बुद्धि को देना उनका काम है । वह कहती है । आप संकोच क्यो कर रहे है ? आप इस प्रकार करे । और भाई तैयार हो जाते है । इस लिये हमारे धर्मशास्त्रो में पत्नी को ''बुद्धिप्रदा'' भी कहा जाता है । बुद्धि की आपूर्तिशाळा भी कह सकते है । सत्कर्म में बुद्धि से सहयोग दे, वाणी से सहयोग दे । उसी का नाम धर्म पत्नी होता है ।

जीवन भगत ने अपने पत्नी से बात किये कि हम क्या करे ? मेरी ईच्छा महाराज को भोजन करवाने की है । तुरंत पत्नी उत्तर देती है अति उत्तम है । यह आनंद की बात है । आनंद की तो बात है । अपने पास कुछ खरीदने की क्षमता नही है । घर में कुछ नही है । पत्नी बोली क्यो संकोच कर रहे है ? मैं आज आटा पीसता हूँ । प्रात:काल रोटी बनाकर खिला देगे । नही-नही मढ की रोटी क्या भगवान को खिलाया जाता है ।

भक्त की पत्नी बोली इसमें चिंता क्या कर रहे है ? आप कथा में जाते है । लगता है समझदारी से कुछ सुनते नही है । कभी सुने नही की सुदामा के तंडूल भगवान को अच्छे लगे थे । शबरी के जूठे बोर भी उन्हे मीठे लगे थे । विदुरजी का साग उन्हे अति प्रिय लगा था । तो क्या हमारे मठ की रोटी उन्हें अच्छी नही लगेगी ? भगत को लगा यह बात तो सही है । अपना भाव अच्छा होने पर भगवान को अवश्य अच्छा लगेगा । प्रात: काल स्नान आदि करके दो मुठ की रोटियाँ बना दी । भाव से भगवान खुस होते है । घर में जो पात्र था । उसमें दो रोटी रखकर पति को ले जाने के लिये बोली ।

आज तो महाराज महल के छत पर थे । जीवन भगत छत पर पहुँच गये । देखकर घबराने लगे । यहाँ पर हमारा क्रम कब आयेगा । साटा वाले है, जलेबी वाले है, मोहनथाल वाले भी है । चुरमा के लड्डू वाले भी है । मगस वाले भी है, अडदिया वाले भी कतार में खडे है । इसमें रोटी वाला हो तो सबसे खराब है । धन्यवाद न मिले उसके बदले में फटकार मिल सकती है । यह क्या समझकर प्रात: मूढ की रोटी ले आया है । लेकिन भाई क्या करु ? क्या करे अर्थात् कौन लाने के लिये कहा था ? तुम्हे कोई जिम्मेदारी थोडे ही दी गई थी । यह मठ की रोटी कही महाराज को खिलायी जाती है । महाराज तो नही बोलेगे, संत भी शायद न बोले जीवन भगत मन ही मन परेशान है । क्या वापस लेकर जाउ ? पीछे जाने पर किसी को ज्ञात नही होगा कि थाली में बचा था । फिर सोचने लगा कि पत्नी बोली है कि अपना भाव तो अच्छा है । इसलिये भगवान अवश्य स्वीकार करेगे । पत्नी के बल को याद करके कतार में पीछे खडे रहे ।

स्वामिनारायण भगवान भक्त की यह भावना जान गये । प्रभु विचार करने लगे कि यह भक्त घबरा गया है । क्रम आते देर हो जायेगी । आगे अच्छे पकवान वाले खडे थे । आते देर हो जायेगी । आगे अच्छे पकवान वाले खडे थे । मठ की रोटी वाला कैसे आगे आ सकता है । भगवान विचार करते है । चलिये हम उसका हाथ पकड लेते है । महाराज चार-पाँच सीढी नीचे उतर कर भगत को अपने पास बुलाते है । जीवन भगत नजदीक आइये । जीवन भगत को बल मिल गया । नजदीक आने पर भी हाथ काँप रहा था । लोग इस अवस्था को देख रहे थे । यदि मठ की रोटी खुल जायेगी तो लोग मेरा उपहास करेगे । महाराज कपड़े को हटा दिये । थाली में से दो रोटी लेकर हाथ में ले लिये । तथा छत पर चले गये । दाहिने हाथ से रोटी खाने लगे । भगवान

रोटी खाते गये । और प्रशंसा करते गये । हे संतो ! हे ब्रह्मानंदजी ! मुक्तानंदजी ! सुरा खाचर ! सोमला खाचर ! सुने-सुने । हम तो भोजन प्रतिदिन करते है । आज की रोटी अद्‌भूत है । ऐसी रोटी तो हम कभी नही खाये है । क्या स्वाद है । महाराज बोले राधा या लक्ष्मीजी ऐसी रोटी नही बना सकती है । इतनी अच्छी ये रोटी है । हे भक्तो इस थाली की प्रतिक्षा न करो । शेष थालियो में से प्रसाद ग्रहण कर लो । इस में से एक टुकडा भी नही मिलेगा । ये दो रोटी हम खा जायेगे । इस जेतलपुर में दो माह रहे आज रहना सफल हो गया ।(विशेष आने वाले अंक मे)

•

सुख का उपाय - सावधानी

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

इस संसार की समाज मे सम्बन्धो का मूल्य सुरक्षित रहे । ऐसे मनुष्य कम होते जा रहे है । अकूत सम्पत्ति वाले की सेवा में असंख्य लोग लगे रहते है । लेकिन समय बदलते ये लोग कहा खो जाते है पता नही चलता है । इस लिये एक सामान्य कहावत कही जाती है कि ''नाणा विनानो नाथियो ने नाणे नाथालाल ।''

इसी अवस्थावाले गाँव में उत्तमचंद शेठ निवास करते थे । शेठ का सितारा साँतवे आसमान पर था । जैसे फूल के पास भ्रमर भ्रमण करते है । उसी प्रकार ही उनके चारो तरफ सगे-सम्बन्धी लोगो का तांता लगा रहता था । शेठ की सेवा हेतु सभी तत्पर रहते थे । शेठ की नजर जिस पर पड़ जाये उसका कल्याण हो जाता है । दूर के रिश्तेदार भी लगता था कि सबसे करीबी है । और बार बार कुशल क्षेम पूछते है । शेठ अति उदार हृदय वाले थे । उनके घर से कोई खाली हाथ नही जाता था । शेठ का व्यापार धमाकेदार रुप से चलता था । उन्हे हिसाब की चिंता नही थी । मदद लेने वाला व्यक्ति अधिक प्रसंशा करके लाभ चाहता था ।

कहा जाता है कि किसी व्यक्ति का समय हमेशा एक जैसा नही रहता है । शेठ का ध्यान हिसाब-किताब पर कम होने के कारण उनके सहायको ने दगा दे दिया । व्यवसाय एक दम बंद हो गया । इस कारण से कई परिवार कंगाली की अवस्था में आ गये । शेठ के घर मे दो समय के आटे के लिये परेशानी होने लगी । लोग उनका साथ छोडकर भाग गये । सभी लोग जो सहायता लिये थे । वे लोग भी मुख फेर लिये ।

शेठ के पास क्षमता अच्छी थी । अचानक दगा मिलने पर कठिनाई आ गई थी । परेशानी से पीछे हट जाये ऐसा शेठ का स्वभाव नही था । वह इस अवस्था से कैसे बाहर आये । उसके तरीके पर विचार करने लगा । शेठ पुनः व्यापार प्रारम्भ करना चाहता था । लेकिन उसके लिये भी कुछ धन की आवश्यकता थी । धन कहाँ से लाये गुणगान करने वाले लोग आज कर्ज रुप में धन भी नही देना चाहते थे । धन के प्रबन्धहेतु अपनी हवेली बेचना का विचार तथा बाद में दूसरे गाँव में रहने के लिये विचार करने लगे । हवेली घर बेचकर सभी कर्ज का भूगतान कर दिये । बाद में शेठ दूसरे गाँव में गये । सारी सम्पत्ति बेच दिये । मात्र एक काँसा की मूर्ति शेठ को अति प्रिय थी । वह अपने पास रख लिये ।

दूसरे गाँव में जाकर गिरवी रखने वाले के पास गये । और अपनी काँसा की मूर्ति २०० रुपया में रखकर व्यवसाय प्रारम्भ किये । परिश्रम करने की क्षमता और प्रमाणिकात हो उसको क्या कहना ! शेठ पुनः अपना व्यवसाय चालू कर दिये । व्यवसाय अच्छे से चलने लगा । मूर्ति छुडाने के लिये गिरवी रखने वाले के पास गये । दो सौ रुपया और व्याज की गणना करके मूर्ति अपनी लेना चाहते थे । मूर्ति अधिक सुंदर थी । गिरवी रखने वाला बोला ! मैं आप की मूर्ति को सुरक्षा हेतु अनाज के भंडार में रख दिया था । अभी चूहे अधिक हो गये है । आप की मूर्ति चूहे खा गये । मुझे बहुत दुःख है लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ । साहूकार २०० रुपया वापस देने लगा ।

शेठ समझ गया कि यह व्यक्ति हमारे साथ दगा कर रहा है । उसे उसी की भाषा में ज्ञान देने के लिये शेठ विचार करने लगा । शेठ व्यापारी के बात में आ गया हो व्यापारी से बोला ! मेरे भाग्य में यह मूर्ति नही है । मुझे उसके बदले में दोसौ रुपया वापस नही लेना है । एक मेरा कार्य करे तो अच्छा होगा । व्यापारी बोला, यहाँ पर चोरो का भय है । मुझे बगल की नदी में स्नान करना है । आप अपने लड़के को हमारे साथ भेजे दे । ताकि जब तक मैं स्नान करु वह हमारे कपड़े की रक्षा करे । वापस वहाँ पर मैं उसे छोड़ जाउगा ।

व्यापारी ने अपने लडके को शेठ के साथ भेज दिया । और विचार करने लगा कि शेठ कैसे हमारी बात में फँस गया । कुछ दूर जाकर शेठ ने व्यापारी के बच्चे को घर में बंद कर दिया । कुछ समय बाद चेहरा उदास करके व्यापारी के पास आकर कहने लगा - आप का लडका हमारा कपडा देख रहा था । इतने

पेईज नं. २३

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) ऐकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "आत्मा को 'सुख' कब मिलता है ?"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम कथा सुनते है तुरंत शांति मिलती है । अर्थात जितने बार महाराज के सानिध्य में होते है । उतनी बार धुन, कीर्तन, पूजा कुछ भी करते है । उतनी समय शांति मिलती है । यदि स्थायी शांति चाहे तो कब मिलेगी । आत्मा को सुख मिलेगा तभी । आत्मा का सुख अर्थात् क्या ? तो आत्मा के अंदर 'परमात्मा' का अनुभव आत्मा का सुख कहा जाता है । इतनी बडी सृष्टि में कितनी विषमता है । एकदम नजदीक के दो व्यक्तियो में स्वभाव की समानता नही दिखाई देती है । हम सभी के अँगुठे के प्रतीक (छाप) का भी एक समान नही होती है । इसके बाद भी प्रत्येक व्यक्ति में एक समानता अवश्य मिलती है । किसी से भी प्रश्न करे । सभी को सुख चाहिए । क्योकि ? व्यक्ति की प्रकृति का स्वभाव भले एक समान न हो लेकिन व्यक्ति की 'आत्मा' वह एक समान स्वभाव वाली होती है । इसलिये प्रत्येक व्यक्ति 'उर्ध्वगामी' है । आनंद स्वरुप वाला है । इस लिये सुख के अग्रसर रहता है । परंतु सच्चे ज्ञान के अभाव के कारण प्रत्येक जीव की दौड भौतिक साधन की तरफ है । भौतिक सुख से बडा सुख शरीर का सुख, मन और आत्मा का सुख बड़ा है । शरीर का सुख अर्थात् स्थूल शरीर में कोई रोग न हो तब उसे शरीरका सुख कहते है । मन का सुख अर्थात् मन में छल, कपट न हो उससे मन निरोगी रहता है । शरीर और मन दोनो निरोगी होने पर आत्मा को सुख मिलता है । हमारी आत्मा अनंत शक्तिवाली है । लेकिन हमें इसका ज्ञान नही होता है । इसे हम उदाहरण से समझ सकते है । गंगाजल साधारण जल से अमूल्य है । लेकिन यह गंगाजल जब नदी में रहता है । तब हम शंका नही करते है । हमें १००% ज्ञात होता है कि यह गंगाजल है । लेकिन इसी गंगाजल को पात्र में रख दे । तो देखने से पता नही चलता है । तो शंका हो जाती है कि यह गंगाजल है कि नही । उसी प्रकार इस शरीर में जो चैतन्य है । शरीर रुपी आवरणं से चैतन्य का ज्ञान नही होता है । लेकिन महाराजी ने जो हुये बल, बुद्धि और विवेक दिये है । उसका उपयोग ''आत्म सुख'' प्राप्त करने के लिये करना चाहिए । हमारी आत्मा की शक्ति कम बढती है । वह कैसे ज्ञात होगा । जब हमारे अंदर संतोष, दया, परोपकार ये रहने पर बढता है । जब दुर्गुण आता है तो कम होता है । दुख आने पर आत्मशक्ति घटती है । अपेक्षा रखने से भी घटती है । हम सब को हमारे बच्चे-बच्चियाँ बेकार समय निकाले तथा हमारी अपेक्षा पूरी न करे तो क्रोधआता है । और दुख होता है । क्रोधऔर दुख के साथ 'अहम' भी आता है । मैने इतना अच्छा किया । फिर भी ये लोग हमारी बात नही मानते है । इससे मन दुःखी होता है । तब मन की शक्ति कम हो जाती है । इसी प्रकार हाथ पैर दर्द करने लगता है । क्योकि ? दर्द के कारण कार्य करने की शक्ति कम हो जाती है । मन के दुःखी होने से हमारे आथ्मा की शक्ति कम हो जाती है । मन के हटने से हमारी चैतन्य शक्ति कमजोर हो जाती है । अपना मन कब डगमगाता है ? जब मन की स्थिति का आधार बाहरी परिस्थिति पर निर्भर होता है । तब अपना मन विचलित होता है । हम लोग बाहर कई लोगो से मिलते है ? कई स्थितियो का सामना करना पडता है । कभी दुःख आता है । कभी स्थित प्रज्ञ बन जाते है । जब अपने अंदर मन की अवस्था स्थिर नही रहती है । बार-बार बदलती रहती है । तब जान लेना चाहिए । अपने मन का नियंत्रण लोगो के उपर है । इस लिये मन के मालिक बने । अपने मन की डोर दूसरे के हाथ में नही जाने दे । उदाहणार्थ हम घर में बैठे हो और टी.वी. का रिमोट हमारे हाथ में रहने पर अपने अनुसार कार्यक्रम देख सकते है । दूसरे के हाथ में होने से उसके हिसाब से टी.वी. देखना होगा । कहने का अर्थ यह है कि अपने मन का नियंत्रण अपने हाथ में रखे । यदि मन का नियंत्रण आप के हाथ में रहेगा तो आप के अन्दर की शांति और अशान्ति आप के हाथ में रहेगी । हमे तो नरनारायण मिले है । कितनी भी विपरित अवस्था हो दुःखी और अशांत नही होना चाहिए । ऐसी अवस्था में सामना करते समय ध्यान देना चाहिए । यह अवस्था हमारे महाराज के हाथ में है । थोडा धैर्य रखे, लेकिन कभी भी गलत मार्ग पर नही जाये । थोडा विलम्ब होता है । लेकिन जब महाराज न्याय करते है तो १००% सम्पूर्ण न्याय देते है । हमे हताश नही होना चाहिए । नकारात्मक विचार नही करना चाहिए । सकारात्मक होकर

आगे की तरफ बढना चाहिए । मानव शरीर मिली है इसकी महत्ता को समझना चाहिए । समय आने पर महाराज उस अवस्था से बाहर लायेगे । एक लडकहारा था । लकडियाँ काटकर जीवन व्यतीत करता था । उस राज्य के राजा उसे लकडी काटते देखकर दया आ गयी । चंदन के वृक्ष का पूरा बाग दे दिया । सोचे की चंदन की लकडी का मूल्य अधिक होगा तो यह धनवान बन जायेगा । लेकिन लकडहारे को चंदन की लकडी का ज्ञान नही था । उसको काटकर कोयला बनाना शुरु कर दिया । चार-पाँच दिन के बाद राजा ने खोजा की वह आदमी क्या कर रहा है ? ज्ञात हुआ कि वह कोयला बनाता है । उसको प्रत्यक्ष बुलाकर चंदन के गुण के बारे में बताये । उसी प्रकार हमे मानव शरीर मिली है । इसे मात्र कोयला की तरह जला देना है या चंदन के वृक्ष के समान सुगंधफैलाना है । ये तो हमे ही निश्चित करना है । जितने वर्ष बीत गये उसे भूल जाये आने वाले वर्षो के लिये समय का सदुपयोग करें । मन को निरोगी और सक्षम बनाये । तो ही आत्मा को सुख मिलेगा । हम जिस गाँव में रहते हो और पूरे गाँव में रोग का प्रकोप हो तो हम सोचते लगते है । हमारा एक ही लक्ष्य रहता है कि हमें बीमारी न हो । इसी प्रकार पूरे संसार में कितने अवगुण है देखने जायेगे तो सम्भव नही है । पूरे जगत में कलियुग चल रहा है । कलियुग के लक्षण अपने अंदर न प्रवेश कर सके । इस पर ध्यान देना है । हमें कोई लाठी से मारने आया हो । और हमें लाठी चलाने नही आये । तो हम उसके शरणागत हो जाते है । उसी प्रकार शास्त्र रुपी ज्ञान की लाठी न होने के कारण कलियुग के वशीभूत रहना पडेगा क्योकि ? अपने पास सच्चा ज्ञान नही है । महाराज ने हम सभी को सत्संग दिये है । शास्त्र भी दिये है । एक बार सोचना है कि हम किसके शरण में है । जब आप यह विचार लेगे तो हर परिस्थिति में मन और दिमाग शांत रहेगा । बाहर कैसी भी परिस्थिति हो अंदर तो साहस भरा रहेगा । ऐसे एक विचार से दुख दूर हो जाता है । भरतखंड के राजा श्री नरनारायणदेव के महल में बैठकर जो भजन-कीर्तन का आनंद मिलता है । उस सुख के सामने संसार का दुःख अति सूक्ष्म लगता है।

•

दम्भ कलियुग का मैल है

– सांख्ययोगी कोकिला (सुरेन्द्रनगर)

दम्भ अर्थात् झूठ की बाल्टी अपनी स्थिति सामान्य हो, तथा बाहर वाले को दूसरे रुप में प्रस्तुत करे । इस दूसरे रुप में दम्भ कहते है । हम जो है उसके जगह पर जो नहीं है उसके प्रदर्शन में चौवीसो घंटे पडे रहना यही दम्भ है । जो है उसे अच्वा दिखाना यह अंदर की गंदगी है । दम्भ कलियुग का मैल है । तथा कीच्चड भी है। दंभ ढका रहे तब-तक अच्छा है । जब बाहर आता है तो उसके परिणाम वर्षो तक भोगना पडता है । कई मनुष्य तो ऐसे होते है कि उनकी स्थिति सामानय होती है, लेकिन दूसरे को दिखाने के लिये बड़ा बनने का आडम्बर करते है । स्वयं के पास २५००० रुपये भी न होने पर दिखावा लोग लाखो के मालिक का करते है । जमीन खरीद कर बडा बंगला बनवाने लगते है । व्यापार में मंदी आ जाती है । बंगले का काम अधूरा ही रहता है । तब-तक बंगला बेचना पडता है । सोना बेचना पडता है । घर का खर्च उठाना भारी पड जाता है । दाल-रोटी मिलना कठिन हो जाता है । जीवन व्यतीत करना कठिन हो जाता है । लोगो के बीच ईज्जत समाप्त हो जाती है । लोग हँसी करने लगते है । इस लिये देखा देखी कार्य दम्भ वश नही करना चाहिए ।

श्री स्वामिनारायण भगवानने गढडा वचनामृत २६ मे लिखते है कि ''अपने हृदय में भगवान का दृढ निश्चय हो भक्ति, धर्म कम हो तथा दूसरे के सामने अधिक प्रदर्शन करना भी दम्भ कहा जाता है । दम्भी का व्यवहार हाथी के दाँत जैसा होता है । जो दिखाने के लिये अलग चबाने के लिये अलग होता है । दम्भी के हास्य से क्रोधी का गुस्सा अच्छा होता है । दम्भी मनुष्य चूहे जैसा होता है । चूहा फूँक मारता जाता है और आदमी के पैर को काटता जाता है । जब तक जलन होती है तब तक रक्त निकलने लगता है । उसी प्रकार दम्भी मनुष्य स्वयं की हानि कर लेता है । उसे ज्ञात नहि होता है । इस लिये सच्चे संत को पहचान करे भगवान का स्मरण कर लेना चाहिए ।

मन मैला तन उजला, बगला कपटी अंग,
तेथी तो कागा भला, तन, मन एकज रंग
देखी उपरनो आटाटोप मने रखे मोटो मानो,
ए तो फोकट फूल्यो छे फोष समझो ए संत शानो ॥

सभी मनुष्यो में प्रायः उपर की आँख होती है । अंदर के आँख विना सच्चे संत नही पहचाने जा सकते है । श्रीजी महाराज वचनामृत में कहते है । हमें अहंकार प्रिय नही है । दम्भ भी नही पसंद है । इतनाही नही हृदय में कम सद्गुण हो और दिखावा अधिक करे । ऐसे दम्भी को देखकर मन खुश नही होता है ।

लोगो को ठगने के लिये साधु का वेश धारण करते है । जैसे सीता का हरण करने वाला वेदज्ञ ब्राह्मण रावण भगवान तथा साधु का रुप लेकर सीता का हरण किया था । सच्ची बात हमेशा चलती है । जो दिखावा करता है । उसे कही न कही गलत करना पडता है । इसलिये जो लोग सादे-सरल नम्रता के साथ रहते है । उसके उपर लोग खुश रहते है । दम्भी को अपने दम्भ का निर्वहन करने के लिये चिंता करनी पडती है । अपना कल्याण

करना हो तो दमभर हित जीवन व्यतीत करना चाहिए।

निष्कुलानंद स्वामी कहते है -

"देह पोषक सारु जे दंभ, करे छे जे कुबुद्धि,
खोटी सुख अरथे आरम्भ, मूके नहि मूझा सुधी,
तेणे जनम पशुने पाड, खोटो खावा कारणे,
मोक्ष मारगे दीधा कमाड कडी जडी बारणे"

एक राजाने कुत्ते को सिंहकी खाल पहनाकर शत्रु के सेना के सामने खडा कर दिया। उसकी लक्ष्य यह था कि शत्रु की हाथी यह देखकर भाग जायेगी। लेकिन विशाल हाथी को देखकर कुत्ते भाकने लगे। बुद्धिशाली वजीर हमला करके राजा को बंदी बना लिया। और राज्य पर विजय प्राप्त कर लिया। मनुष्य को कुछ समय के लिये ठगा जा सकता है। लम्बे समय तक ठगा नही जा सकता है। सद्गृहस्थ बनना अच्छा है। लेकिन जेन्टलमैन बनना कठिन है। साधुता का स्वांग सरल है। लेकिन साधुता-सदाचार-धर्म का पालन कठिन है। वस्त्र का बदलाव नही वृत्ति का बदलाव साधुता होती है। हँस और बगुला देखने में धवल लगते है। लेकिन एक मछली खोजता है तो दूसरा मोती चयन करता है। देखने में एक समान लेकिन चयन शक्ति अलग-अलग है। संत-असंत पहनावे से नहीं उनके व्यवहार से पहचाने जाते है।

गीता में दम्भी को मिथ्याचारी भी कहा जाता है। भैल हठ करके घंटो तक बैठता है। लेकिन उसका मन विषयो में लिप्त हो उसे दम्भी कहा जाता है।

दुनिया में जहाँ देखे उपरी आवरण का बोलबाला है। पैकिंग और मार्केटिंग शक्तिशाली होनी चाहिए। खराब लकडी के उपर सनमाइका लगे रहेने से अच्छा दिखाई देता है। बाहर के आवरण से अच्छा लगता है। जिससे आदमी ठग लिया जाता है। उसी प्रकार दम्भी बाहर से आकर्षक होता है. वाणी विलास और स्वागत के आडम्बर से मनुष्य ठगा जाता है।

एक बार महाराज और संत तथा हरिभक्त गढपुर से वडताल संघ के साथ जा रहे थे। भाल क्षेत्र में एक नग्न साधु धुनी लगाकर बैठे थे। रास्ते से जो प्रसार हो हो वह चरण स्पर्श करता था। संत और महाराज आगे जा रहे थे। उनके पीछे सोमल खाचर और सूरा खाचर भी थे। तभी सोमल खाचर बोले देखो ! यह साधु कितनी कठिन तपस्या कर रहे है। तब सुरा खाचर बोले यह साधु तपस्वी है। हमारी एक मानता है। सवा रुपये रखने की है। लेकिन में कहा रखूँ ? वस्त्र तो पहने नही है नही तो कपडे में रख देता। बगल में रखने पर कोई रात्री में धन को ले सकता है। यह साधु जी ध्यान से बाहर आये तो उन्हे देकर मानता के कर्ज से मुक्त हो जाउ। इस प्रकार बात-चीत कर रहे थे। तभी साधु ने मुह खोला और सुरा खाचर उसे पहचान गये। ये तो दम्भी है। उन्होने जमीन से मिट्टी उठाकर मुँह पर फेका। इतने में साधु क्रोधित होकर अनाब-सनाब बोलने लगे। तब सूरा खाचर बोले ज्ञानी साधु होकर क्रोधक्यो करते है। इस तरह आडम्बर से आदमी ठगा जाता है। ऐसे लोगो का एक दिन पतन होता है। इसलिये दम्भी नही होना चाहिए।

हमे संत और भगत कहलाने में अधिक आनंद है। लेकिन संत और भगत बनने में कम रस है। यह हलाहल कलियुग चल रहा है। इस में दम्भी मानव की पहचान करके उसका त्याग करना चाहिए। क्योकि दम्भ कलियुग की मैल और कीचड है।

अनु. पेईज नं. २० से आगे

में एक बगुला आया। और आप के पुत्र को उठा ले गया। हमने बचाने का अधिक प्रयास किया। लेकिन प्रयास निष्फल हो गया।

शेठ की ऐसी बात सुनकर व्यापारी तथा उसकी पत्नी रोने लगे। व्यापारी शेठ के खिलाफ शिकायत लिखवादी। न्यायाधीश ने सभी बात की सत्यता का निरीक्षण किये। बात-विवाद चलता रहा। शेठ बाद में दलील किये यदि काँसे की मूर्ति चूहा खा सकता है तो दश वर्ष के बच्चे को बगुला क्यो नही उठा सकता है। न्यायाधीश ने मूर्ति देने तथा परेशानी हेतु पाँच सौ रुपया व्यापारी को दण्ड दिये।

जो व्यक्ति धैर्यपूर्वक आये हुए परेशानी का सामना करता है। उसी किसी भी दिन कष्ट नही मिलता है।

मित्रो ! देखा न शेठ के थोड़ी लापरवाही से कितनी हानि हुई। ऐसा न हो इसलिये हमारे ईष्टदेव स्वामिनारायण भगवान ने आज्ञा दिये है। खर्च - आमदनी का सही हिसाब रखे। आप के अनुसार खर्च करे। शेठ ध्यान दिये हो तो बडी समस्यासे बच जाते। सभी भक्त जन सुखी रहे। हमारे ईष्टदेव शिक्षापत्री मे आज्ञा किये है। अपने हित के लिये है। उसका पालन करके सुखी रहे।

सत्संग समाचार

कोरोना वायरस में कालुपुर मंदिर और श्री नरनारायणदेव अधिकार क्षेत्र के मंदिरो द्वारा किये गये राहत सेवा की गतिविधियाँ

परमकृपालु सर्वोपरी ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का अत्यधिक दयालु स्वभाव है । अर्थात वंदना के पद में प्रेमानंद स्वामी गाते है कि ''कोईने दुखियो रे देखी न खमाय दया आणी रे, अति आकणा थाय अन्न, धन, वस्त्र रे आवीने दुःख टाणे, करुणा दृष्टि रे'' इस उक्ति के अनुसार इस स्थान पर विराजमान हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री भी इतने ही दयालु स्वभाव के है । पूरे विश्व में कोरोना का प्रकोप है । इस संकट के समय अपना सम्प्रदाय श्री नरनारायणदेव पीठ हमेशा देश की प्रजा के दुःख में सहभागी बना है । और बनता भी रहेगा । चाहे मोरबी का जल प्रलय हो, कच्छ में भूकंप की घटना हो, अकाल, बाढ और चीन और पाक से युद्ध का काल रहा हो । हमेशा हमारे कालुपुर मंदिर से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आदेश से संत-हरिभक्त कंधा मिलकर तन, मन और धन से सम्पूर्ण देश प्रजा की सेवा की है । उनके दुःख में सहभागी बने है ।

महा भयंकर कोरोना वायरस मार्च महीने में हमारे देश और गुजरात राज्य में पैर फैला दिया था । तभी सर्व प्रथम हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री हमारे आनेवाले श्री नरनारायणदेव देश में आने वाले उत्सव समैया, पाटोत्सव, पारायण, पधरामणी आदि सभी प्रसंग तथा छोटे-बड़े मंदिरो को दर्शनार्थी के लिये बंद कर दिया गया । तथा अपने छोटे-बड़े शिखरबंधमंदिरो के महंत स्वामीश्री को आदेश दे दिया गया था कि देश की सेवा में जी जान से लग जाये । हमारे देश के सैनिक, पुलिस कर्मी प्रतिदिन कमाने वाले गरीब लोगो तथा इस महामारी में सेवा हेतु जुडे लोगो को किसी भी समय भोजन व्यवस्था की जाये । यह काम मंदिर द्वारा करे । गरीबो के लिये फूड-पैकेट वितरण की सूचना कालुपुर मंदिर से पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी तथा उनके संत मंडल द्वारा कालुपुर में रहने वाले संतो द्वारा फूड पैकेट की सेवा की गयी । मार्च-२०२० से २४ अप्रैल तक प्रातः और शांयको ९,८९,३०० फूड पैकेट तैयार करके सरकार एवं कार्पोरेशन द्वारा वितरण किया गया । पुलिस कर्मियो को प्रातः ७७,६०० और शायं ३४,४०० फूड पैकेट सामने जाकर देते थे । मार्च से लेकर मई मास तक प्रातः ३२० और शायं २२० पुलिस कर्मी अपने कालुपुर मंदिर में भोजन करते थे । इसके बाद जेतलपुर मंदिर, कांकरिया मंदिर, नारणपुरा मंदिर, नारायणघाट मंदिर, ऐप्रोच (बापूनगर) मंदिर, धोलका मंदिर, मूली मंदिर, सुरेन्द्रनगर मंदिर, रणजीतगढ और राणीप मंदिर आदि अनेक मंदिरो के पू. महंत स्वामी मंदिर से भोजन कराना तथा फूड पैकेट वितरण प्रवृत्ति २ महीने से अधिक की गयी । जेतलपुर मंदिर से पू. महंत स्वामी का संत मंडल स्वयं गरीब असरग्रस्त पुलिस कर्मी हास्पिटल में भोजन बनाकर पूर्ति करके उच्च कार्य किये थे । हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री का उद्देश्य ऐसा होता है । छोटे से छोटे मनुष्य का ध्यान देकर उनका पोषण करे । और यह समय ऐसा है कि एक दूसरे की सहायता प्रेम से करे । कोई परिवार भूख से पीडित न रहे । श्रीहरि के आदेश का पालन हमारा कालुपुर मंदिर और उसके अधिक क्षेत्र में आने वाले मंदिरो से यह कार्य सम्पन्न किया गया । (कोठारी स्वामी महापुरुषदासजी)

धोलका मंदिर में ठाकुरजी का पाटोत्सव

परमकृपालु सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा अ.नि. (दादा गुरु) स.गु. शास्त्री स्वामी हरिस्वरुपदासजी, अ.नि. स.गु. स्वामी कृष्णजीवनदासजी, अ.नि. स.गु. स्वामी महापुरुषदासजी तथा गुरुवर अ.नि. स.गु. स्वामी जगदीशप्रसाददासजी के दिव्य संकल्प से तथा स.गु. महंत स्वामी सत्यसंकल्पदासजीकी शुभ प्रेरणा से धोलका धाम में विराजमान महाप्रतापी श्री मुरलीमनोहरदेव हरिकृष्ण महाराज का १९३ वाँ पाटोत्सव विधिवत रुप से मनाया गया । जिसके यजमान पद पर प.भ. महावीरसिंह विक्रमसिंह गोहिल (कुदेलवाले) परिवार सहित थे । ठाकुरजी का महाअभिषेक, श्रृंगार आरती और अन्नकूट आरती संतो द्वारा की गई थी ।(कोठारी स्वामी - धोलका)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रिद्रोल का १६ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर रिद्रोल का १६ वाँ वार्षिक पाटोत्सव सुंदर रुप से मनाया गाय था । इसके बाद कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री गांधीनगर), शा. स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी आदि संतोने कथा-वार्ता का लाभ दिये थे । पाटोत्सव के यजमान डॉ. निमाबेन अजयभाई थे । साथ में प.भ. विठ्ठलभाई पटेल परिवार भी उपस्थित था । गाँव के हरिभक्त अधिक खुश हुए ।

(कोठारी मनुभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्रीजी महाराज के

दिव्य चरणो के प्रसादीभूत मोटेरा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का ३० वाँ वार्षिक पाटोत्सव विधिवत मनाया गाय। जिसके यजमान पद पर प.भ. सुशीलाबा नटवरसिंह चावडा (बिलोदरावाले) परिवार था । इस प्रसंग पर त्रिदिवसीय रात्रीय वचनामृत कथा ता. २६-२-२०२० से ता. २८-२-२०२० तक हुए । प्रथम दिवस शा. डी.के. स्वामी (कालुपुर), शा. स्वामी सत्संगिभूषणदास और शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) ने कथा का रसपान कराये थे । महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) इस प्रसंग के प्रेरक रहे थे । ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट, ध्वजारोहण इत्यादि विधिवत रुप से किया गया। हरिभक्त दर्शन करके धन्य हुए। (कोठारीश्री मोटेरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से बोपल के मंदिर में वर्ष भर विविधउत्सव उमंग से मनाया गया।

फरवरी महीने में अपने कालुपुर मंदिर द्वारा श्री वचनामृत द्विशताब्दी उत्सव पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से बोपल की महिला मंडल ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में रास-गरबा का सुंदर कार्यकर्म रखे थे । साथ ही साथ छोटी बच्चियोने सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम दिखाये थे । लोगो को कार्यक्रम से मंत्रमुग्धकर दिये थे। प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री और पू. श्रीराजा ने बच्चियों को खुश होकर आशीर्वाद दिये।

(प्रविण उपाध्याय - बोपल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुरा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से मणीपुरा (बोरिंगवाले) श्री स्वामिनारायण मंदिर में खाखरिया विस्तार में चलने वाली एकादशी सभा अवसर पर ता. ६-३-२०२० के दिन प्रात: ८ से शाम ४ बजे तक धुन, कीर्तन, कथा, वार्ता का सभी हरिभक्तोने लाभ उठाया। इस अवसर पर स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर), स.गु. स्वा. बालकृष्णधासजी (जमीयतपुरा), शा. स्वा. सत्संगिभूषणदासजी आदि संत मंडलने कथा-वार्ता का लाब दिये थे। (मणीभाई - अहमदाबाद)

श्री नरनारायण देव युवक मंडल - कोलाद (ता. कडी) द्वारा कोलाद से जेतलपुरधाम की १० वी पदयात्रा का सुंदर प्रबन्धकिया गया था।

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

रामपरा (ता. बढवाण) बहनो के मंदिर का द्वितीय वार्षिक पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के खुशी से मूली श्री राधाकृष्णदेव की छत्रछाया रामपरा गाँव में बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर का दूसरा पाटोत्सव ता. १०-३-२०२० के दिन विधिवत मनाया गया था।

इस अवसर पर ता. ६-३-२०२० से ता. १०-०३-२०२० तक श्रीमद् सत्संगिजीवन रात्रीय पंचान्ह पारायण स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) के वक्ता पद से हुई । बड़ी संख्या में हरिभक्तो ने कथा श्रवण का लाभ लिये थे । पूरे अवसर का सभा संचालन श्री शैलन्द्रसिंह झालाने किया था। सभी बहनो के तरफ से ठाकुरजी का अभिषेक और अन्नकूट धाम-धूम से किया गया था । पूरे अवसर पर स.गु. कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी का मार्गदर्शन मिला था।

अन्य सेवा में प्रेमवल्लभ स्वामी, शांति स्वामी, कनु भगत, आदि जुडे थे । मूली मंदिर से महंत स्वामी एवम् शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी आये थे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टींबा (बहनो का) ६ ठ्ठा वार्षिक पाटोत्सव

मूली निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मूली अधिकार में टीबा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर बहनो के ६ वें पाटोत्सव ता. ११-३-२०२० के विधिवत मनाया गया था। इस अवसर पर ता. ७-३-२०२० से ता. ११-३-२०२० तक पंच दिनात्मक रात्रीय कथा साधु त्यागवल्लभदासजी तथा साधु सत्संगसागरदाजी (सुरेन्द्रनगर) के वक्ता पद से हुई थी। ग्राम के सभी हरिभक्तो ने कथा श्रवण का लाभ लिये।

इस अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट आदि किया गया था । सम्पूर्ण प्रसंग का संचालन पुराणी स्वामी नित्यप्रकाशदासजी किये थे। इस प्रसंग पर धामोधाम से संतो में शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) आदि आये थे।

इस उत्सव में स.गु. कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से यहाँ के हरिभक्तो ने प्रेरणात्मक सेवा किये थे।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटास्का शिकागो

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से इटास्का श्री स्वामिनारायण मंदिर में आगामी उत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया। जिसके कई हरिभक्तोने भाग लिया था। दिनेशभाई जोशीने समापन विधिपूर्ण किये थे।

शास्त्री स्वामी भक्तिनंदनदासजी और ब्र. के.पी. स्वामी (जेतलपुर) समस्त अवसर पर हरिभक्तो के साथ रहकर प्रबन्धकिये थे। (वसंत त्रिवेदी - शिकागो)

कोरोना महामारी में लंडन विल्सडनलेन मंदिर द्वारा अनेक सेवा-प्रवृत्ति

विश्व में व्याप्त कोरोना महामारी के कठिन समय में पूरे विश्व में बंद का आवाहन रखा गया है। जैसे घर में से बाहर नही निकलना है। काम के लिये नही जाना है। पढने नही जाना है। सब्जी तथा आहार सामग्री हेतु बाहर नही जाना है। इस अवस्था में जीवन निर्वाह कठिन हो जाता है। सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा धर्मकुल के आशीर्वाद से और भुज मंदिर के सभी संतो की कृपा से श्री स्वामिनारायण मंदिर विल्सडन के हरिभक्त, युवक और युवतियों अपने प्राण की चिंता न करते हुए। विना जाति धर्म के भाव से हटकर, अलग-अलग टीम बनाकर जनकल्याण के कार्यो में लग गये थे। कुछ टीम बच्चो को अध्यापन, कुछ लोग रक्षाकिट पहनकर रोगियो से मिल रहे है। उनको देखना तथा दवा दे रहे है। कुछ टीम विकलांगो एवम् निराधारो को भोजन उनके घर तक दे रहे है। कुछ लोग वाहन-साधन लेकर दुकान से वस्तु लाकर आवश्यक जगह पर पहुँचा रहे है। कुछ लोग छोटे-छोटे थैलियो में भर कर सामान को बाँट रहे है। हरिभक्त इस प्रकार कई तरीके से मानवो की सेवा में लगे हुए है।

मंदिर में नवनिर्मित केरहोम और फ्लेट में रहने वाले तथा पूजारी और संत की आवश्यक सामग्री दे रहे है और रक्षा भी कर रहे है। इस से उन्हे बाहर नही जाना पडेगा। वस्तुए प्राप्त हो जायेगी।

ये सब अच्छे तरह से पूर्ण करने के लिये आर्थिक सहायता की आवश्यकता पडती है। इसके लिये मंदिर के हरिभक्त तथा शुभचिन्तक हमेशा तैयार रहे थे। कुछ लोग आर्थिक सहायता तो कुछ वाहन सेवा राशन सेवा, सब्जी सेवा, वस्त्र सेवा आवश्यक सेवा दिये है।

कोरोना के सामने लड रहे लोग जिनको अपने प्राण की भी चिंता नही है। ऐसे सेवा भावी डॉक्टर, नर्स तथा आवश्यक सेवा में जुडे युवक-युवतियों का आभार व्यक्त किया गया। इसके लिये ताली बजाना, छोटे-बच्चे चित्र बनाकर अभिवादन किये थे।

इसके पश्चात सेवा प्रदान करने वाले हरिभक्तो, मुमुक्षुओ और शुभचिन्तको को इस मंदिर की तरफ से सह्रदय आभार व्यक्त किया गया था। और प्रभु से विनती की जाती है कि आप सभी धार्मिक सेवा की प्रवृत्ति चालू रखे। समय-समय पर ऐसे लोक कल्याणकारी सेवा में सहयोगी बने। आपकी सेवा और सहयोग के बिना यह कार्य सम्भव नही है।

इस आपातकाल में यह मंदिर आने वाले रामनवमी। श्रीहरि जयंती आदि धार्मिक उत्सव उल्लास पूर्वक पूर्ण किये। भुज मंदिर के श्री नरनारायणदेव के १९७ वे पाटोत्सव तथा कोरोना महामारी सामने चलते युद्ध में सेवा भावि क्रिया-कलाप के समय भुज से आये ६ संतो का मंडल लगातार यहाँ पर ही रहकर लाभ दिये। युवक मंडल के कार्यो में भी सहयोग दिये थे। हम लोग अपने संतो के आभारी है।

कोरोना महामारी के काल में हमारे कई हरिभक्त बीमार हुए। कितने भगवान के धाम को प्राप्त हुए। इस काल में दूसरे हरिभक्त प्रत्यक्ष सहानुभूति नही दे सके थे। लेकिन आज के वैज्ञानिक समय में टेक्नोलोजी का उपयोग करके परोक्ष रुप से सहानुभूति प्रदान किये। इस माध्यम से स्मशान यात्रा में जुडे, शोक सभा। श्रद्धांजलि सभा में सहयोगी बने थे। युवक मंडल की सभायें, वचनामृत की सभा इत्यादि की प्रवृत्तियाँ चालू थी। सत्संग की प्रवृत्ति, संस्कार, ज्ञान सुरक्षित रहे ऐसी सुविधाये। प्रशाधनो के जानकर हरिभक्त अपना अमूल्य समय देकर सेवा दिये थे। उनका आभार मानते है।

रिजनरेशन प्रोजेक्ट के निमित्ते को लेकर इस मंदिर में योग्य सुधार करके आज के समय में उपयोगी हो ऐसे तकनीक के उपयोग से मंदिर में प्रतिदिन शायं-सुबह होने वाली प्रवृत्तियो का हरिभक्तो को लाभ मिला। आज यह सत्संग समाज युवा कमेटी के दीर्धदृष्टि की प्रशंसा करता है। और आभार व्यक्त करता है।

मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर २६००० पाउन्ड का हरिभक्तो के तरफ से डोनेशन मिला था। और १५००० पाउन्ड की सब्जी, फल, फूल, क्रोजन बुक, बच्चो के लिये इस्टर प्रेजेन्ट, मंदिर के फ्लैट और केर होम में जीवन जरुरी माल-सामान लोक डाउन में मिला है। यह पूरी रकम कोविड-१९ यु.के. में उपयोग किया जायेगा।

अक्षरवास

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर के वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध और श्री राधाकृष्णदेव और धर्मकुल के अधिक निष्ठावान तपस्वी संत स.गु. स्वामी बालकृष्णदासजी गुरु स.गु. पुराणी स्वामी पुरषोत्तमदासजी ज्येष्ठ सुद-१२ एवम् दिनांक ०६-०६-२०२० शनिवार के दिन सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के अखंड - भजन करते अक्षर निवासी हुए। उनके अक्षरवास से मूली देश में श्रेष्ठ संत की कमी हुई है। श्रीहरि उन्हे अपने निजधाम में सुख दे। ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) अहमदाबाद मंदिर में विराजमान श्री नरनारायणदेव को चंदन के वाघा का दर्शन। (२) नारायणघाट मंदिर के श्री घनश्याम महाराज को चंदन का वाघा दर्शन। (३) कोरोना काल में सत्संग के ऑनलाईन होने पर, नारायणघाट मंदिर द्वारा ऑनलाईन सत्संग में ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन। (४) जेतलपुर मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की अभिषेक आरती करते प.पू. आचार्य महाराजश्री। (५) धोलका मंदिर पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का दर्शन। (६) जेतलपुर मंदिर के १९५ वें पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते और सभा को आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

कालुपुर मंदिर में फूलदोलोत्सव

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो से आग्रह और सुविधा के लिये, आनलाईन डोनेशन
कालुपुर मंदिर की नीचे दिये गये ओफिसियल वेबसाईट पर कर सकते है ।
htpp://www.swaminarayan.in/donation

Pratul Khasari